अमृत

मार्च, 1980
वर्ष 15 ❋ अंक 10
मूल्य 1.75

अमृत-सूची

१. सभी सम्बन्धों में से ईश्वरीय सम्बन्ध का महत्व १
२. गूंजेगी धरती (गीत) ४
३. सेवा समाचार (चित्रों में) ५
४. सतयुग समाज व्यवस्था और उसकी आवश्यकता ७
५. हमने क्या खोया और क्या पाया १०
६. ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की नींव—पवित्रता ११
७. ब्रह्माकुमार-कुमारी कहते, हमको भगवान पढ़ाते १३
८. स्वर लिपि का अर्थ १४
९. सेवा समाचार (चित्रों में) १५
१०. स्वयं को स्थिति द्वारा सेवा १७
११. हिम्मत और उल्लास (कविता) १८
१२. इच्छाओं के नियन्त्रण की आवश्यकता १९
१३. एक ज्ञान चर्चा २०
१४. सेवा समाचार (चित्रों में) २५
१५. सभी सुखों की प्राप्ति का एक उपाय २७
१६. एक का महत्व २८
१७. आध्यात्मिक सेवा समाचार २९

ऊपर के चित्र में केन्द्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्री को ब्र० कु० इन्द्रा जी ईश्वरीय सन्देश सुना रही हैं। उनके साथ प्रैस प्रतिनिधि, ब्र० कु० राधा तथा ब्र० कु० जयप्रकाश वकील खड़े हैं।

ऊपर के चित्र में ऊँझा रोटरी क्लब द्वारा आयोजित मेले में वहां के सेवा केन्द्र द्वारा आध्यात्मिक **प्रदर्शनी** लगाई गई थी। रोटरी क्लब के प्रधान **प्रदर्शनी का** उद्घाटन दीपक जला कर कर रहे हैं।

दांए के चित्र में ब्र० कु० इन्दरा, जयप्रकाश वकील, ब्र० कु० राधा एवं भ्राता पी० वी० नरसिम्हा राव के साथ खड़े हैं। उन्हें ईश्वरीय साहित्य व सन्देश दिया गया।

ऊपर कलकत्ता में 'अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस' के अवसर पर वहां के उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश अमेन्द्रनाथ सेन पधारे थे। ब्र० कु० कानन उन्हें संग्रहालय के चित्रों की व्याख्या दे रही हैं।

ऊपर चित्रदुर्ग में आयोजित 'स्मृति दिवस समारोह' के अवसर का है। वहां के डिप्टी कमिश्नर 'पिताश्री ब्रह्मा' के चित्र का अनावरण कर रहे हैं।

सम्पादकीय

सभी सम्बन्धों में से ईश्वरीय सम्बन्ध का महत्त्व

जब हम इस सृष्टि रूपी रचना पर गहराई से विचार करते हैं तो हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि इसमें **सम्बन्ध** अत्यन्त महत्त्वशाली हैं। जब आत्मा इस संसार में आ कर शरीर लेती है, तब से ही उसके **सम्बन्ध** शुरू हो जाते हैं। बल्कि, शायद यह कहना अधिक उपयुक्त होगा कि वह जहाँ आकर शरीर लेती है, वहीं उसका साकार होना भी उसके पूर्व-निश्चित **सम्बन्ध** ही के आधार पर होता है। उसका उन्हीं माँ-बाप से सम्बन्ध होना होता है, तभी तो वह वहाँ जन्म लेती है। फिर धीरे-धीरे उस शिशु अथवा बालक को अधिकाधिक सम्बन्धों का परिचय अथवा भान होता है और उन-उन सम्बन्धों के अनुसार ही परस्पर व्यवहार, शिष्टाचार अथवा कर्त्तव्य शुरू होता है। इन्हीं सम्बन्धों को मर्यादित करने के लिए ही हम व्यवहार-संहिता बनाते हैं या नैतिकता-अनैतिकता अथवा आचार एवं चरित्र की चर्चा करते हैं। यदि माता-पिता, बहन-भाई, पति-पत्नी और अड़ोसी-पड़ोसी में अथवा व्यक्ति और समाज में सम्बन्ध राग और द्वेष से रहित होते हैं तो हम उस प्रवृत्ति को 'पवित्र प्रवृत्ति' कहते हैं और उस नर-नारी के कर्मों को 'श्रेष्ठ कर्मों' की संज्ञा देते हैं और यदि उन सम्बन्धों में विकृति आती है अथवा मर्यादा का अतिक्रमण होता है तो हम उसे 'विकर्म' कहते हैं। अतः पाप और पुण्य भी **सम्बन्ध** ही को ठीक निभाने या गलत विधि निभाने के साथ जुटे हुए हैं। कर्त्तव्य (Duty) और कर्त्तव्य (Non-Duty), धर्म और अधर्म, विधि और निषेध (Do's and Don'ts) सभी सम्बन्ध ही से तो जुड़े हुए हैं। सम्बन्ध के बिना तो मनुष्य के विचार ही नहीं चल सकते। दिन-भर में आप जितने मनुष्यों के बारे में सोचते हैं, उनसे आपका पिता, भाई, चाचा, सखा, सहकारी, पड़ोसी आदि का कोई-सा सम्बन्ध जरूर है, वरना आपके स्मृति पटल पर अथवा आपके विचार-दर्पण में वे आ ही नहीं सकते। अतः सम्बन्ध ही मनुष्य के आचार और विचार की धुरी हैं।

सभी ज्ञान और विज्ञान भी सम्बन्धों ही की चर्चा करते हैं

देखा जाय तो सभी ज्ञान-विज्ञान भी सम्बन्धों ही का बोध कराते हैं। समाज शास्त्र (Civics) नागरिकों के परस्पर सम्बन्ध को स्पष्ट करता है और उसके आधार पर कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य की चर्चा करता है। अर्थशास्त्र (Economics) मनुष्य के आर्थिक सम्बन्ध की और 'राजनीति विज्ञान' राजनैतिक सम्बन्धों की व्याख्या करता है। विधि शास्त्र (Law) इन सम्बन्धों ही को ठीक बनाये रखने या इन में बिगाड़ पैदा होने (अपराध होने) पर इन्हें न्यायपूर्ण निपटाने के लिए नियम निर्धारित करता है। इसी प्रकार भूगोल (Geography) और पर्यावरण विज्ञान (Ecology) हमारे भौगोलिक सम्बन्धों तथा पर्यावरण के साथ हमारे सम्बन्ध को निश्चित करते हैं। ऐसी ही बात अन्य विज्ञानों के बारे में भी कही जा सकती है। इस से स्पष्ट है कि संसार में सम्बन्ध का बहुत ही महत्त्वपूर्ण स्थान है।

ईश्वरीय ज्ञान आदि की आवश्यकता मानवीय सम्बन्ध ठीक करने के लिए

आज जो लोग यह पूछते हैं कि ईश्वरीय ज्ञान, योग, दिव्य गुणों की धारणा आदि की क्या आवश्यकता है, उन्हें यह मालूम होना चाहिए कि ईश्वरीय ज्ञान हमारे उन पारस्परिक मानवी एवं आत्मिक सम्बन्धों का सही बोध कराके हमें बतलाता है कि हमारे सम्बन्ध कैसे होने चाहिएँ।

इन सम्बन्धों के बिगड़ने का सबसे पहला रूप, शरीर और आत्मा के बीच 'रथ और रथी', 'कार और ड्राईवर', 'मकान और मालिक' के सम्बन्ध को न जानकर इनका एकीकरण अथवा तादात्म्य (Identification), अर्थात इनको एक मान लेना है। इससे ही देहाभिमान रूपी मनोविकार उत्पन्न होता है और उससे अन्य सारे विकार जन्म लेते हैं और इसी को ठीक करने के लिए ईश्वरीय ज्ञान और राज योग की

आवश्यकता है।

गुणों की धारणा भी सम्बन्धों के लिये

पुनश्च, सम्बन्धों ही में श्रेष्ठता लाने के लिए दिव्य गुणों की चर्चा भी होती है—दिव्य गुण ही ईश्वरीय ज्ञान का एक अन्य विषय हैं। हम संसार में देखते हैं कि हरेक व्यक्ति उस ही मनुष्य से सम्बन्ध रखना चाहता है जिसमें नम्रता, मधुरता, स्नेह, सहयोग की भावना, धीरज, सन्तोष आदि हों। जहाँ सन्तोष की बजाय लोभ, सहनशीलता की बजाय क्रोध, मधुरता के स्थान पर कटुता, सहयोग की बजाय विरोध अथवा द्वेष हों, वहाँ सम्बन्ध बिगड़ जाते हैं। जो मनुष्य सभी सम्बन्धों में ठीक बरतता हो, उसे ही 'गुणवान', 'मर्यादा पुरुषोत्तम' अथवा 'अहिंसक' कहा जाता है और जो मनुष्य सम्बन्धों में पवित्र स्नेह की जगह पर ईर्ष्या, स्वार्थपरता, निर्दयता, द्वन्द्व आदि पैदा करता है उसे ही गुणहीन माना जाता है। और, हम रोज़ देखते हैं कि गुणवान को ही 'महान्' माना जाता है, गुणवान की ही महिमा होती है। इससे ही आप समझ सकते हैं कि सम्बन्धों में गुण लाना और उसके लिए ईश्वरीय शिक्षा को लेना कितना महत्त्वपूर्ण है। दिव्य गुणों के बिना सम्बन्ध अखड़ते हैं, दुःख दायक महसूस होते हैं और इन सम्बन्धों के बिना दिव्य गुणों की चर्चा ही अर्थहीन है।

सेवा का आधार भी सम्बन्ध ही है

इसी प्रकार मानव मानव में एक स्नेह का सम्बन्ध मानकर, भ्रातृत्व को जानकर, दूसरों के प्रति शुभ भावना, उत्सर्ग, त्याग तथा मन-वचन-कर्म से उनकी उन्नति और शान्ति के लिए प्रयत्न ही का नाम सेवा है। जो इस भ्रातृत्व के सम्बन्ध को नहीं समझता अथवा इस सम्बन्ध के कारण अपने कर्त्तव्य को नहीं समझता, वह सेवा भी नहीं कर सकता।

'योग' शब्द का तो अर्थ ही 'सम्बन्ध जोड़ना' है

इसी प्रकार 'योग' आत्मा के एक अत्यावश्यक सम्बन्ध को ही फिर से जोड़ना है। आत्मा का परमपिता परमात्मा से जो सम्बन्ध है, वह टूट जाने के परिणामस्वरूप ही तो अन्य सम्बन्धों में विकृति आई है और मनुष्य आध्यात्मिक शक्ति से विहीन हुआ है। अतः मनुष्य को यह बोध करा कर कि वह शरीर नहीं बल्कि एक आत्मा है और आत्मा के नाते से उसके माता-पिता के रूप में उसका सम्बन्ध परमात्मा से है, उसके इस सम्बन्ध को फिर से जोड़ने का 'योग' रूप पुरुषार्थ कराया जाता है ताकि उसके जीवन में शान्ति और आनन्द का ईश्वरीय-पैत्रिक अधिकार उसे प्राप्त हो।

इस सब कथनोपकथन का तात्पर्य यह है कि **जब आत्मा इस सृष्टि-मंच पर है तब उसे सम्बन्धों में तो रहना ही होगा। किसी एक भी सम्बन्ध के बिना रहना तो असम्भव ही है। कम-से-कम देह और आत्मा के सम्बन्ध को तो मृत्यु से पहले छोड़ा ही नहीं जा सकता। अतः जब इन सम्बन्धों को निभाना ही है, तब मनुष्य को यह ज्ञान होना ही चाहिए कि इन सम्बन्धों को अलौकिक रीति से कैसे निभाया जाय।**

सम्बन्धों में श्रेष्ठता लाने की मूल नीति

परमपिता परमात्मा ने इन सम्बन्धों को ठीक करने के बारे में यह कहा है कि **"न किसी को दुःख दो, न किसी से दुःख लो।"** यह हमारे कर्म-विधान की मूल नीति होनी चाहिए। इस नीति से किसी का भी विरोध नहीं हो सकता। परन्तु इस विषय में कठिनाई यह है कि प्रायः मनुष्यों को यह मालूम नहीं है कि इस नीति पर आचरण करने का अर्थ है—जीवन को निर्विकार बनाना क्योंकि काम, क्रोधादि विकार ही दुःख के उत्पादक हैं। अतः जब जीवन को निर्विकार बनाने की बात सामने आती है तो कुछ लोग तो सम्बन्धों से इन विकारों को निकालने के बारे में ही सहमत नहीं होते। वे कहते हैं कि ये विकार तो स्वाभाविक हैं; इनके बिना तो काम ही नहीं चलता। एक ओर तो वे यह भी कहते हैं कि संसार में भ्रष्टाचार फैला हुआ है, नैतिक मूल्यों का ह्रास होता जा रहा है, न्याय नहीं रहा, चारित्रिक पतन हो रहा है' आदि-आदि। दूसरी ओर वे यह भी कहते हैं कि इन विकारों के बिना तो संसार चल ही नहीं सकता! हालांकि वे देख रहे हैं कि संसार ठीक रीति से चल नहीं रहा, वह लंगड़ा रहा है अथवा जैसे-कैसे घिसट रहा है और इन से ही तनाव और अशान्ति का वातावरण बना हुआ है।

दूसरे कुछ लोग ऐसे हैं जो कहते हैं कि विकारों पर विजय प्राप्त करना मुश्किल है। वे कहते हैं कि

जीवन निर्विकार बन जाये तो बात बहुत अच्छी है परन्तु हम में वह सामर्थ्य नहीं कि जिससे हम इन दुर्जेय शत्रुओं को जीत सकें।

अब जो प्रथमोक्ति प्रकार के लोग हैं उन्हें यह समझना चाहिए कि सृष्टि तो वास्तव में सम्बन्धों के बिना नही चल सकती जबकि वे ग़ल्ती से कहते हैं कि विकारों के बिना सृष्टि नहीं चल सकती। गहराई से विचार करने पर वे मानेंगे कि विकार तो उन सम्बन्धों में बिगाड़ पैदा करते हैं; **बिगाड़ के बिना सृष्टि तो चल सकती है परन्तु हाँ, वकालत, कचहरियाँ, जेल खाने, पागल खाने, मिलिट्री आदि के कार्य नहीं चल सकते।** हाँ, आज जो संसार में **गोला-बारूद के कारखाने, बनावट और मिलावट के धन्धे, लूट-खसूट आदि-आदि सब दिखाई देते हैं, वे नहीं चल सकते क्योंकि सम्बन्धों में पवित्रता और स्नेह आने से दु:ख-दर्द मिट जाते हैं, कलह-कलेश समाप्त हो जाते हैं। इन सम्बन्धों में पवित्रता लाने से संसार के कार्य बन्द नही होते, नरक के द्वार बन्द हो जाते हैं।** ज्ञान सम्बन्धों को तोड़ने के लिए नहीं कहता, उनके दिव्यीकरण की विधि समझाता है; उन सम्बन्धों में सद्गुण भरने की राय देता है; उनमें से स्वार्थ निकाल कर सच्चा स्नेह भरने की युक्ति सिखाता है।

फिर जो लोग इन विकारों पर विजय प्राप्त करने की शक्ति के अभाव की बात करते हैं, उन्हें यह याद रखना चाहिए कि एक सम्बन्ध ऐसा है जिसे जोड़ने से बहुत शक्ति मिलती है। वह सम्बन्ध आत्मा का सर्वशक्तिमान् परमात्मा के साथ है। उस सम्बन्ध को जोड़ने से सभी साँसारिक सम्बन्धों में भी सार आ जाता है और जीवन में शान्ति और आनन्द का रस भर जाता है। पवित्रता, सुख और शान्ति का जन्म-सिद्ध अधिकार उस परमपिता से सम्बन्ध जोड़ने ही से मिलता है।

भ्रान्ति वालों को भी शान्ति का दान

अब कुछ लोग कहते हैं कि जीवन निर्विकार बनाने का पुरुषार्थ करने पर भी कुछ लोग हम से दु:खी हो जाते हैं। वे कहते हैं कि जब हम ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करना चाहते हैं, मांसाहार और मद्यपान छोड़ने का यत्न करते हैं, सिनेमा में जाना बन्द करते हैं तो कुछ लोग हमसे रुष्ट हो जाते हैं। हम तो चाहते हैं कि हम उनकी सेवा करें, उनके कल्याण के लिए निमित्त बनें और अपना भी जीवन पवित्र बनायें, परन्तु किसी-न-किसी भ्रान्ति के कारण वे रुष्ट हो जाते, उत्तेजित हो जाते अथवा मन-मुटाव कर लेते हैं।

इस विषय में हमारा विचार यह है कि हमें अपने मन में टटोलना चाहिए कि हम से कोई भूल तो नहीं हुई, हम ने उनके प्रति कोई अशुभ विचार तो नहीं किया, हमारे मन में कोई उद्वेग तो उत्पन्न नहीं हुआ। यदि हमारी ओर से ऐसा कुछ नहीं हुआ तो हम उन्हें दु:ख देने के निमित्त नहीं हैं बल्कि वे ही अपने संकल्पों-विकल्पों की दलदल में स्वयं को ले जाते हैं। हमें उनके प्रति निरन्तर शुभ भावना को बनाये रखना चाहिए और उनके कल्याण के लिए प्रयत्नशील रहना चाहिए। उनके रुष्ट भाव को देखकर हमें निर्विकार बनने और बनाने के पुरुषार्थ को नहीं छोड़ना चाहिए क्योंकि अन्ततोगत्वा यह उनके लिए भी कल्याणकारी है। हम जानते हैं कि जब किसी के पाँव में काँटा लगा हो तो हम यद्यपि उसे सुई चुभोकर उसका काँटा निकालना चाहते हैं तथापि उस व्यक्ति को तो कुछ कष्ट अनुभव होता है। परन्तु हम तब यह जानकर कि इसमें उसका भला ही है, पुरुषार्थ को नहीं छोड़ते। अन्तर केवल इतना है कि काँटा चुभने की हालत में वह व्यक्ति भी जानता और मानता है कि सुई उसका काँटा निकालने के लिए ही उसे चुभाई जा रही है, परन्तु जिसमें से विकार रूप काँटा निकालने का यत्न हो रहा है, वह कई बार इस बात को नहीं जानता कि यह प्रयत्न उसके कल्याण ही के लिए हो रहा है, अत: वह रुष्ट हो जाता है। हमें कोई-न-कोई रास्ता निकाल कर उसे निर्विकार बनाने का उपाय करते रहना चाहिए।

हमारा नम्र-निवेदन

सम्बन्ध के महत्त्व के विषय में हमें एक आवश्यक बात और कहनी है। वह यह कि शारीरिक, लौकिक अथवा नश्वर सम्बन्धों का रस तो हमने जन्म-जन्मान्तर लिया है। परन्तु परमात्मा को सम्बोधन करते हुए जो हम गाते आये हैं कि हे प्रभो, आप ही हमारे मात-पिता, सखा, स्वामी, विद्याप्रदाता और हमारे सर्वस्व (त्वमेव माता च पिता त्वमेव) हो, क्या उन सम्बन्धों का अनुभव हमने किया है? जो ऐसे गायन-योग्य, मधुर सम्बन्ध हैं,

उनका हम अनुभव ही न करें यह तो ग़फ़लत और अलबेलेपन का सूचक है ! जिस प्रभु को प्यार का सागर कहा जाता है, उसके अनोखे प्यार का रस ही जिसने न लिया हो वह कितना भाग्यहीन है ! उस-जैसे सच्चा प्यार, जिसमें सभी सम्बन्धों की रसना भरी हुई हो, तो कोई दे ही नहीं सकता ; तब यदि वह प्यार हमने न पाया तो क्या पाया ?

मुझे अनुभव है कि जब हम किसी ऐसे बच्चे से बात करते हैं जिसकी माता या पिता का साया उसके सिर से उठ गया हो तो माता या पिता के बारे में उससे पूछने पर उसके नेत्र स्रवित होने लगते हैं ! परन्तु, हाय-हाय, मनुष्य की यह कैसी कठोरता है कि जो आत्मा का माता-पिता और सर्वस्व है, उससे सम्बन्ध-विच्छेद हुए होने पर उसके मन में उस प्रिय-तम प्रभु के प्यारे के लिए कसक भी पैदा नहीं होती ? क्या मनुष्य के मन में प्यार का पानी सूख गया है ? क्या उसके प्यार के सब मोती लुट चुके हैं ? सांसा-रिक प्यार के बिना उसे नींद नहीं आती, प्रभु का प्यार पाने के लिए उसके पास समय भी नहीं है ! यह स्वयं से कैसा धोखा है जिस के कारण मनुष्यात्मा अपार प्यार से वंचित है !!

हरेक को मालूम होना चाहिए कि आत्मा ही परमात्मा नहीं है बल्कि परमात्मा से हमारे (आत्मा के) सभी सम्बन्ध हैं और परमात्मा प्यार का सागर है। वह प्यार का सागर अब बाँहें पसार कर कहता है—'मैं ही आपका सच्चा मीत हूँ, मेरे लाल, आओ तुम्हें प्यार के झूले में झुलाऊँ; माया के झंझटों से थके मेरे वत्स, आओ तुम्हें स्थायी शान्ति का मधुर रस पिलाऊँ ! परन्तु हे वत्स, विकारों का विष पीना छोड़ अब अमृत का प्याला पीओ तो मुझ अमरनाथ को तुम सामने पाओगे।"

हाँ, कुछ ज्ञान-निष्ठ, योग-युक्त प्रभु-वत्स ऐसे भी होंगे जिन्हें उस परमपिता का प्यार मिला होगा। परन्तु परमात्मा के साथ तो आत्मा के अन्य भी सभी सम्बन्ध हैं। उन सभी सम्बन्धों का प्यार पाने की अब शुभ वेला है जिसे 'संगम युग' कहा जाता है। अब इन सभी सम्बन्धों का सलोना सुख न पाया तो कुछ न पाया। यदि यह धुन अब न लगी तो बाद में सिर धुनने के सिवा और कोई चारा ही नहीं रहेगा। शुभं अस्तु, शीघ्रं अस्तु। --जगदीश

गीत

गूंजेगी धरती

ले०—ब्रह्माकुमार शिव नारायण, मुलुंड,

आज तो गूंजेगी धरती, शिव बाबा के नारों से
टकरायेगी आवाज़ें सूरज चांद सितारों से—आज
कदम मिलाकर चलो रे भैया, पांडव शक्ति सेना है
ज्ञान योग और पवित्रता से, भारत स्वर्ग बनाना है ॥

भारत नया बनायेंगे, स्वर्ग धरा पर लायेंगे
दिल की बातें करेंगे हम, अपने मीठे शिव बाबा से।—आज
सुख शान्ति का पाठ पढ़ा है, स्वधर्म अपनाया है
कलियुग परिवर्तन का तूने झंडा नया उठाया है ॥

बलिदानी संतानें हैं, मंजिल के दीवाने हैं
हंसते गाते गुज़र जायेंगे, इस कांटों की दुनिया से—आज
दूर रही है जो भी आत्मायें, अभी वक्त है आ जावो
शिव बाबा से महावाक्य से जीवन सफल बना जावो ॥

ब्रह्मा द्वारा शिव बाबा ने, गीता-ज्ञान सुनाया है
संगमयुग में आकर शिव ने, राजयोग सिखाया है।
त्रिमूर्ति है इनका नाम, करलो तुम इनकी पहिचान
अभी नहीं तो कभी नहीं, तुम फिर पीछे पछताओगे—आज

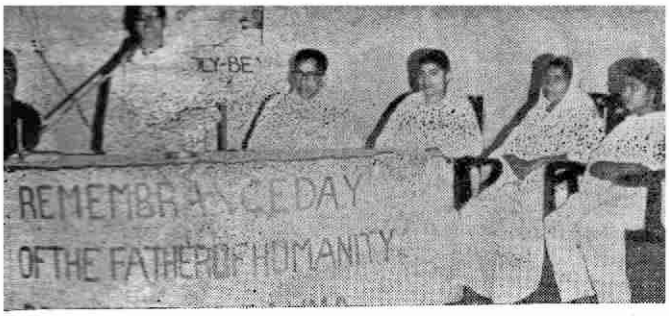

यह चित्र जगन्नाथ पुरी में आयोजित स्मृति दिवस समारोह के अवसर का है। ब्र० कु० निरुपमा प्रवचन कर रही हैं तथा मंच पर मुख्य अतिथि भ्राता रामचन्द्र रोटरी बैठे हैं।

'स्मृति दिवस समारोह' के अवसर पर प्रो० मुंग के गुरुदत्त पिताश्री ब्रह्मा के चित्र का अनावरण कर रहे हैं। उनके साथ ब्र० कु० सुनन्दा ब्र० कु० रंगराव व अन्य बहन भाई खड़े हैं।

—यह चित्र जालन्धर में बाबा दयाल (ध्यानपुर वाले) के जन्म दिन पर निकाली गई शोभा यात्रा के अवसर पर वहाँ के सेवा केन्द्र द्वारा निकाली गई 'स्वर्ग की झाँकी का दृश्य है।

यह चित्र चन्द्रपुर में आयोजित 'स्मृति दिवस समारोह'— के अवसर का है। ब्र० कु० कुसुम प्रवचन कर रही हैं तथा मंच पर मुख्य अतिथि डा० दुबे तथा अन्य बहन भाई बैठे हैं।

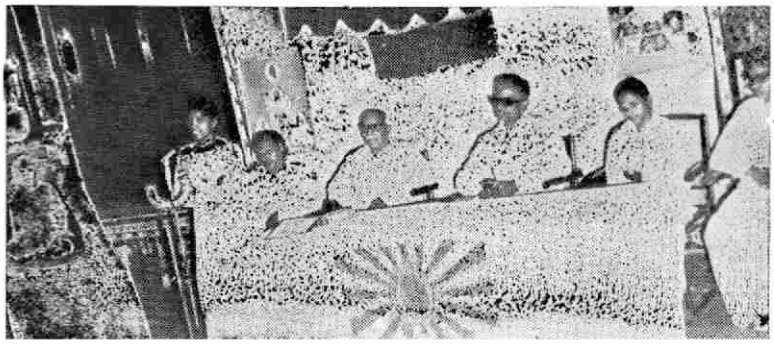

—पिता श्री स्मृति दिवस समारोह के अवसर पर ब्र० कु० चन्द्रकान्ता जी प्रवचन कर रही हैं तथा मंच पर टेक्नीकल शिक्षामंत्री भ्राता हथग्रीवाचारी के साथ वहाँ के बहन भाई बैठे हैं।

यह चित्र उदयपुर में आयोजित स्मृति दिवस समारोह के अवसर का है। वहाँ के अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान के संचालक भ्राता विजय-नारायण प्रवचन कर रहे हैं।

यह चित्र बरहामपुर में आयोजित स्मृति दिवस समारोह के अवसर का है।

यह चित्र अहमदाबाद में आयोजित स्मृति दिवस समारोह के अवसर का है जिसमें डा० डेविड प्रवचन कर रहे हैं।

यह चित्र होस्पैट में आयोजित स्मृति दिवस समारोह के अवसर का है। वहाँ के सिविल जज भ्राता थवंतु प्रवचन कर रहे हैं।

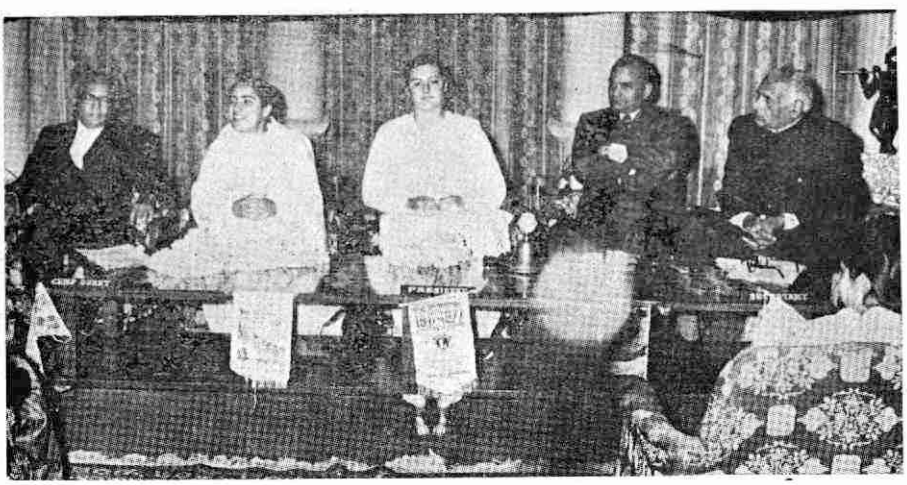

यह चित्र जयपुर में आयोजित कार्य-क्रम का है। वहाँ के लायन्स क्लब में आस्ट्रेलिया की बहिन मोरीन प्रवचन कर रही हैं। क्लब के प्रधान एवं सचिव साथ में बैठे हैं।

सतयुग–समाज व्यवस्था और उसकी आवश्यकता

ब्रह्माकुमार रमेश—गामदेवी बम्बई

सतयुग के बारे में हम अपनी दैवी भाषा में कहते हैं कि "वहाँ पर सर्वगुण संपन्न, १६ कला संपूर्ण, संपूर्ण निर्विकारी, अहिंसा परमो देवी-देवता धर्म था।" आज के बुद्धिजीवी लोगों को यह बात थोड़ी कल्पना-सी लगती है और इसीलिये शिव बाबा ने सतयुग की परिभाषा, व्यावहारिक दुनिया के लोगों के लिये इस प्रकार बताई है कि सतयुग एक आदर्श समाज-व्यवस्था है जिसमें आध्यात्मिक, आधिभौतिक, भौतिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, वाणिज्यिक, शैक्षणिक, नैतिक, सामाजिक तथा शारीरिक संबंधों की व्यवस्था सतोप्रधान होती है'। वहां प्रकृति भी सतोप्रधान और वहां के मनुष्यात्माओं के वृत्ति, विचार और व्यवहार भी सतोप्रधान होते हैं। शिव बाबा ने इसीलिये सतयुग को एक आदर्श व्यवस्था के रूप में हमारे सामने लक्ष्य रखा है। समाज की ये भिन्न-भिन्न व्यवस्थाएं एक-दूसरे के पूर्णरूप से सहयोगी बनकर स्वर्णमय धागे में अलंकृत होकर स्वर्णयुग की प्रतिष्ठा इतिहास के पत्रों में गाई हुई है। पवित्रता और निर्विकारी जीवन रूपी रेशमी धागा अखंड, अटल, निर्विघ्न राज्यसत्ता के निमित्त बनता है।

बौद्ध धर्म के श्री दिघानिकया ने भी अपनी किताबों में स्वर्णयुग की महिमा की है कि वहां पर मनुष्य का आपसी व्यवहार संपूर्णतः नैतिक मूल्यों के आधार पर चलता था और समाज दैवीगुण संपन्न और सुखी था। स्वर्ण युग में एक आदर्श समाज है जिसकी रचना राजविप्लव और उपद्रव (Anarchy & Chaos) के बाद हुई और इस समाज का नेतृत्व ऐसे व्यक्ति को दिया गया जो सबको माननीय था। बाद में यही नेता राजा बना और राज्यसत्ता का उदय हुआ। जैन धर्म में भी इसी प्रकार सतयुग का ही वर्णन किया हुआ है। अंधकार का युग जाने के बाद सृष्टि पर स्वर्ग की स्थापना हुई। स्वर्ग में सभी मनुष्यों की आवश्यकताएँ संपूर्ण रूप से पूर्ण होती थीं। उसी धर्म के प्रथम तीर्थंकर के समय में अशांति और दुःख का वातावरण पूर्ण हुआ और सुख का साम्राज्य शुरू हुआ। यहां पर एक विशेष बात ध्यान देने योग्य यह है कि हरेक धर्म के प्राचीन ग्रंथों और पुराणों आदि में समय को बहुत दूर-दूर तक ले गये हैं, जैसे कि जैन धर्म में महावीर जी को २४वें तीर्थंकर मानते हैं और वृषभ देवजी को प्रथम तीर्थंकर मानते हैं और दोनों के बीच करोड़ों वर्ष बीत चुके—ऐसा मानते हैं। कालगणना को वास्तविक रूप में रखना हो तो हमारी कालगणना और जैनियों की २४ तीर्थंकरों की कालगणना एक समान हो सकती है। यदि वृषभदेवजी को ही पहले लक्ष्मी-नारायण माना जाए तो सतयुग-त्रेता के २१ जन्म और द्वापर-युग के पहले तीन जन्मों की औसत आयु ९० से १०० वर्ष की मानी जाए तो सृष्टि के आरंभ से आई हुई आत्माओं का २४वाँ जन्म, अर्थात महावीरजी का इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर द्वापरयुग के करीब २५० वर्ष बीत जाने के बाद धर्म स्थापक के रूप में प्रवेश कहा जा सकता है। इस विषय में विशेष संशोधन की आवश्यकता है। महाभारत के शांतिपर्व में, कौटिल्य के अर्थशास्त्र में तथा नारद और बृहस्पति की स्मृतियों में भी इसी का वर्णन है। शांतिपर्व के ५९वें अध्याय में लिखा है कि कैसे पहले अराजकता (Anarchy) थी, तमोप्रधान व्यवहार था, मनुष्यों को मुंझावट (Confusion) थी – सभी मनुष्यात्माओं ने सृष्टि-रचता को प्रार्थना की, तब रचयिता परमात्मा ने बतलाया कि "जब सभी अपने कर्मों का सच्चाई से पालन करेंगे तभी समाज फिर से सुख-शांति संपन्न बन सकता है।" जब सभी ने परमात्मा की इस आज्ञा पर चलने की प्रतिज्ञा की, तब परमात्मा ने दुख अशांति दूर कर राजा मनु की स्थापना की। इस तरह से सृष्टि के इस स्वर्ण युग की स्थापना के बारे में सभी ने माना है कि 'अव्यवस्थित के पश्चात' व्यवस्थित अनीति के पश्चात् नीतिवान, असुरक्षित के बाद सुरक्षित और उपद्रव के बाद एक व्यवस्थित विश्व की स्थापना हुई। (There emerged cosmos out of chaos, of order

out of disorder, of ethics out of unethics & security out of insecurity).

पश्चिम की दुनिया के हॉब्स, लॉके और रोशे ने भी इसके बारे में लिखा है। हॉब्स ने कहा है कि अराजकता का साम्राज्य ख़तम करके लोगों ने अपनी व्यक्तिगत स्वतंत्रता को एक राजा के हाथ में सोंप दिया। लॉके ने लिखा है कि उस समय पर विचारपूर्वक सिद्धांत पर (Law of reason) समझदारीपूर्वक, समाज चलता था और राज्य-व्यवस्था का कारोबार करने वाले अपनी आंतरिक शक्ति के आधार पर कारोबार चलाते थे और प्रकृति भी सतोप्रधान स्वरूप में सेविका बनकर सेवा में तत्पर थी। रोशे की मान्यता है कि पहिले एक कुटुंब की रचना हुई होगी, बाद में उसमें जो मुख्य होगा उसे सत्ता दी गई और उनकी सत्ता में सबने विश्वास रखा और समाज इस प्रकार एक अविभक्त अंग के रूप में चलने लगा। पश्चिम के ये नेताएं ऐसे आदर्श समाज की रचना हुई होगी—ऐसा मानते हैं। परन्तु साथ-साथ मार्क्स, एंजिल्स और लेनिन आदि दूसरी बातें प्रस्तुत करते हैं। वे मानते हैं कि समाज और राज्य की रचना एक वर्ग का दूसरे वर्ग से भेद उत्पन्न करने के लिये की गई हैं और इस भेद के आधार पर सत्ताधीशों ने सत्ता-अर्पितों का सदा ही शोषण किया है। इस प्रकार सत्ताधीशों का एक समाज बन गया जिसने ही सदा आर्थिक, नैतिक आदि क्षेत्रों में दलितों का शोषण किया। सत्ताधीश पूंजीपति बने और दलित (पीड़ित) मज़दूर के मजदूर ही रहे। पीड़ितों ने अपने स्वाधिकार को सिद्ध करने के लिए संगठनों की स्थापना की और इस संगठन के गठन से राजकीय दलों की उत्पत्ति हुई और अंत में परिणाम स्वरूप क्रांति हुई। क्रांति के परिणाम स्वरूप फिर से स्वशासित सार्वभौम राज्यसत्ता का निर्माण हुआ। लेनिन आदि ने रशिया में मार्क्स और एंजिल के स्वप्न के आदर्श प्रमाण क्रांति उत्पन्न करके पीड़ितों की सार्वभौम राज्यसत्ता का निर्माण किया। प्रश्न यह है कि यह—राज्यसत्ता रामराज्य क्यों नहीं बना और क्यों आज बर्लिन की दीवार खड़ी करके लोगों को पूर्व जर्मनी से पश्चिम जर्मनी में जाने की रोक लगाई जाती है।

शिव बाबा ने हमें राज्यसत्ता के सतोप्रधान, सतो, रजो और तमोप्रधान—इस प्रकार चार स्वरूप बतलाये हैं। सृष्टि चक्र की भी इसी प्रकार कालगिनती की गई है। राज्य व्यवस्था के मापदंड से लोगों की सुख और शांति की अभिलाषाओं को नापना यथार्थ नहीं है। मार्क्स, एंजिल, लेनिन और माओ की रामराज्य स्थापना करने की असफ़लता—एक बात की चुनौती देती है कि लोगों की लोगों पर व्यवस्था, अर्थात् मानवीय शासकीय व्यवस्था, तब तक संपूर्ण नहीं हो सकती जब तक वह मानवीय-शासकीय व्यवस्था दैवी व्यवस्था नहीं बनती। सतयुग की सतोप्रधान राज्य व्यवस्था के सूत्रधारों ने कभी शोषण नीति अपनाई नहीं थी। न ही वहां पर दंड का उपयोग किया जाता था। इसी समाज के बारे में कहा गया है कि हर एक व्यक्ति अपने ही धर्म – सतोप्रधान संस्कार के आधार पर चलता था और इसलिये राजकीय व्यवस्था, दंड लेने और देने वाली व्यवस्था नहीं थी। कर आदि भी स्वैच्छिक थे, अर्थात् अपने विशेष उत्पादन को स्वैच्छिक रूप में राज्य दरबार में साहूकार प्रजा आदि लोग आकर देते थे। सतयुग में भी राजा, दास, साहूकार, प्रजा और चांडाल इस प्रकार के विभिन्न वर्ग ज़रूर थे परंतु ये वर्ग जैसे कि मार्क्स और एंजिल ने बतलाया है, वर्ग भेद का कारण नहीं बने।

वर्गभेद के कारण वर्ग-विग्रह शुरू हुआ—यह भी पाश्चात्य साम्यवादी विचार मानने वालों की एक भ्रांत कल्पना है। जब हरएक व्यक्ति अपने सतोप्रधान स्वरूप में प्राप्त वर्गिक स्थिति को प्रालब्ध से मिली हुई वर्ग-स्थिति समझता है, तब वर्ग, विग्रह का कारण नहीं बनते हैं परंतु वर्ग कार्य-दक्षता का प्रतीक बनता है और सभी प्रकार के वर्ग आपस में प्रेम और शांति से व्यवहार करते हैं। जैसे शरीर में स्थित आंख, कान, दांत, जोभ आदि इंद्रियों के बीच में वर्ग विग्रह उत्पन्न नहीं होता किंतु शरीर के अंग हैं और उनकी तन्दुरुस्ती के आधार पर शरीर की तन्दुरुस्ती गिनी जाती है, वैसे ही सतयुग में हरएक वर्ग एक विराट और विशाल समाज का गौरवपूर्ण अंग था। समाज एक परिवार की तरह चलता था। वर्तमान समय में परमपिता परमात्मा बीजरूप बन करके, उसी परिवार का ज्ञान होवनहार देवताओं के जीवन में प्रस्थापित कर रहे हैं। आज भी साम्यवादी देशों में वर्गभेद है। ब्रेज़नेव 'कोसीगिन आदि की सत्ताएं

और पद सामान्य मनुष्य से विशेष ही हैं। इसलिये वर्गों के अंदर विग्रह उत्पन्न करके क्रांति उत्पन्न करने से रामराज्य की स्थापना नहीं हो सकती क्योंकि वर्ग-भेद का ज़हर बीज बनता है।

लेनिन ने अपनी पुस्तक "स्टेट एंड रेवोल्यूशन" (State & Revolution) में मार्क्स के विचारों का प्रतिपादन किया है कि राज्य व्यवस्था उन वर्गों के आधार पर उत्पन्न हुई शासकीय व्यवस्था है जिसमें एक वर्ग द्वारा दूसरे वर्ग का सदा दमन होता है और इसी दमन को विधि (Law) का रूप देने के लिये तथा उसको शाश्वत बनाने के लिये राज्यसत्ता का निर्माण हुआ। इस तरह से सृष्टि के आदि से चली राज्य व्यवस्था को उन्होंने वर्ग-विग्रह के रुधिर से अभिषेक किया है। यदि सतयुगी सतोप्रधान राज्य-व्यवस्था वर्ग-विग्रह से दूषित होती तो उसका गायन 'अटल, अखंड, निर्विघ्न राज्य' के रूप में न होता। यह विचार तो ऐसे हास्यास्पद है जैसे कि किसी एक मनुष्य ने एक पेंशनर को, बिना मेहनत किये, पैसे लेते हुए देखकर कहा कि "यहां तो रामराज्य है; बिना किसी मेहनत के यहां तन्ख्वाह मिलती है"। पेंशनर के बारे में ऐसी टीका सुनकर जैसे मन में हंसी आती है, वैसे ही इस वर्ग-भेद के सिद्धांत को सुन-कर हंसी आती है। जब तक बुद्धि का स्तर सबका अलग है और सबके कर्म तथा दृष्टि, वृत्ति अलग-अलग है तब तक समाज से वर्ग निर्मूल हो नहीं सकते। परंतु जब अधिकार (हक) की भाषा चली जाएगी और कर्म तथा प्रालब्ध की भाषा हरेक के मुख से निकलेगी तब वर्ग-भेद की भाषा समाप्त हो जायेगी। लेनिन की एक बात समझने योग्य है जो उसने एक दृष्टि-कोण से लिखी है परंतु हम अपने दृष्टि-कोण से उसे समझ सकते हैं। लेनिन ने कहा है कि "Under socialism, all will govern in turn and will soon become acclimatised to one governing". "समाजवाद में सभी व्यक्ति अपनी-अपनी बारी से (In turn) शासन करेंगे और जल्द ही एक शासक के अभ्यस्त हो जावेंगे"। त्रिकालदर्शी परमात्मा ने इस बात का रहस्य बतलाया है कि सतयुग की आदि से आनेवाली आत्माएं भिन्न-भिन्न नाम रूप से ब्रह्मा के दिन अर्थात् सतयुग और त्रेतायुग में कहीं न कहीं, किसी तरह भी शासक जरूर बनेंगी। एक दूसरे के राज्य में इस तरह से शासन के समय रहने वाले ज़रूर एक-दूसरे के सहयोगी बनेंगे। इसलिये ही परमात्मा अभी एक ही समय पर ब्राह्मण, देवता क्षत्रिय धर्म की स्थापना करते हैं। यदि सतयुगी और त्रेतायुगी संपूर्ण रचना को जन्मों के आधार पर टुकड़े-टुकड़े कर, एक सम्पूर्ण २५०० वर्ष और २१ जन्मों का चित्र बनाकर समझें तो प्रतीत होगा कि इन २५०० वर्ष और २१ जन्मों के सभी के संस्कार मिलाने का कर्त्तव्य शिव पिता परमात्मा इस समय कराते हैं। इस बात के समर्थन में शिव बाबा के महावाक्य हैं कि चंद्रवंशी राजाएं भी सतयुगी समाज व्यवस्था के समय पर भिन्न नाम रूप से ज़रूर होंगे। कम पुरुषार्थ के कारण सतयुग में उच्च पद नहीं पा सकते परंतु कोई न कोई अच्छे कर्म किये हैं उसके फलस्वरूप आगे-पीछे त्रेतायुग में उन्हें राज्य व्यवस्था के सूत्रधार बनने का जरूर सौभाग्य मिलता है।

आज के गरीब या पीड़ित यह नहीं मानते या यह सोचने का भी प्रयत्न नहीं करते कि वे गरीब वा पीड़ित क्यों है? सतयुग के विभिन्न वर्गवाले आज अपनी शक्ति और अशक्ति दोनों को स्पष्ट जानते हैं और उसी कारण वे अशक्ति को अशक्ति के रूप में पहचान करके, शक्ति को असक्ति और अशक्ति को शक्ति समझने की गलती नहीं करते। कर्म, अकर्म और विकर्म की गुह्य गति के ज्ञान तथा विनाश के बाद धर्मराज की कचहरी में हुई सफ़ाई के कारण यह मानसिक दुर्बलता अर्थात् अशक्ति में आसक्ति चली जाती है।

स्थल मर्यादा के कारण यह लेख समाप्त करते हैं। उसी राज्य व्यवस्था के बारे में अधिक विवरण अगले लेख में पढ़िये।

हमने क्या खोया और क्या पाया

लेखक—ब्र० कु० निर्मला (गुना) म०प्र०

१. देहअभिमान खोया—स्वभिमान पाया
२. साकार खोया – अव्यक्त पाया
३. भटकना खोया—मंज़िल पाई
४. बन्धन खोया—सर्व रुहानी सम्बन्ध पाया
५. अवगुण खोये—दैवी गुण पाये
६. व्यर्थ खोया – समर्थ पाया
७. विनाशी देह में आसक्ति खोई—अविनाशी आत्मा पाई
८. अशान्ति खोई—शान्ति पाई
९. क्रोध खोया—सन्तोष पाया
१०. काम खोया—पवित्रता पाई
११. मोह खोया – प्रेम पाया
१२. लोभ खोया—धीरज पाया
१३. अहंकार खोया—नम्रता पाई
१४. दुःख खोया – सुख पाया
१५. रोना खोया – हंसना पाया
१६. लौकिकता खोई – अलौकिकता पाई
१७. बोझ खोया—ताज पाया
१८. आलस्य खोया—उत्साह पाया
१९. भक्ति खोई– ज्ञान पाया
२०. रात खोई—दिन पाया
२१. ख़ुदी खोई—ख़ुदा पाया
२२. साइन्स का आकर्षण खोया—साइलेन्स पाई
२३. माया खोई—बाप पाया
२४. मजबूरी खोई—मजबूती पाई
२५. हठ योग खोया—राजयोग पाया
२६. इन्तज़ार खोया—इन्तज़ाम पाया
२७. नास्तिकता खोई—आस्तिकता पाई
२८. परिस्थिति की परवश्वता खोई—स्वस्थिति पाई
२९. स्वार्थ खोया—सेवा पाई
३०. पुरानी दुनिया खोई—नई दुनिया पायी
३१. कलियुग खोया—संगम युग पाया
३२. भय खोया—निर्भयता पाई
३३. हद खोई—बेहद पाई
३४. महिमा खोई—महानता पाई
३५. मैं-पन खोया—विश्व पाया
३६. चिन्ता खोई—चिन्तन पाया
३७. शास्त्र खोये—मुरली पाई
३८. झूठ खोया—सत्य पाया
३९. मरना खोया—जीना पाया
४०. गुरु खोया—सत्गुरु पाया
४१. ज़माना खोया—शिव बाबा पाया
४२. नकल खोया—असल पाया
४३. दानवता खोई—दिव्य मानवता पाई
४४. ग़म खोया—ख़ुशी पाई
४५. आसुरी मत खोई—ईश्वरीय श्रीमत पाई
४६. दुश्मन खोया—मित्र पाया
४७. माँगना खोया – देना पाया
४८. मुश्किल खोया—सहज पाया
४९. मेहनत खोई—वरदान पाया
५०. एक खोया—पदम पाया

सूचना

अंग्रेज़ी में बाबा ने किस अवसर पर अथवा किस विषय में क्या कहा, इससे सम्बन्धित पुस्तक छप चुकी है।

२. अंग्रेज़ी में तीन मास की मुरलियाँ के प्वाइन्ट्स की पुस्तक भी छप चुकी है। जिसको जितनी चाहियें, जौन के स्टाक से मंगवा सकते हैं।

—व्यवस्थापक

ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय की नींव—पवित्रता

ब्रह्माकुमारी सन्तोष, आबू रोड

"कलियुग के अन्धकारमय विश्व में पवित्रता का सूर्य भी उदित हुआ होगा"—ऐसा विश्वास करना मानव के लिए कठिन है। मनुष्य की दूषित मनोवृत्तियाँ और मन की दुर्बलताएँ उसे यह स्वीकार नहीं करने देतीं कि नर-नारी एक-साथ रहकर पवित्रता को भी अपना सकते हैं। परन्तु यह अटल सत्य है कि ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय की नींव पवित्रता है।

इस ईश्वरीय विश्व-विद्यालय की स्थापना क्यों हुई? संसार को पावन करने के लिए। वो श्रेष्ठ आदि सनातन देवी देवता धर्म, जिसका मूल पवित्रता था, जब लोप हो गया तो उसकी पुनर्स्थापना हेतु पतित-पावन परमात्मा ने पवित्रता की नींव रक्खी और इस ईश्वरीय विश्व-विद्यालय की स्थापना की। किसी भी मानवीय शक्ति के सहयोग से पवित्र जीवन बनाना अवश्य ही कठिन है, परन्तु ईश्वरीय शक्ति के द्वारा यह एक मात्र खेल है।

भारतीय दर्शनों में सृष्टि-चक्र के क्रम का ज्ञान न होने के कारण कई भारतीय विद्वान सृष्टि-चक्र और पवित्रता के सम्बन्ध को नहीं जानते। इस सृष्टि-चक्र में अगर ज़रा भी पवित्रता न रहे तो यह संसार वीरान बन जाए। ऐसे ही समय जबकि विश्व वीरानता की ओर तेज़ी से दौड़ रहा था स्वयं परमात्मा ने मनुष्य को पुनः पवित्रता का वरदान दिया।

जो मनुष्य इस ईश्वरीय विश्व-विद्यालय को यथार्थ रूप से जानते हैं, वो इसकी महानताओं के आगे नत-मस्तक होते हैं। इस ईश्वरीय विश्व-विद्यालय में माताओं को परमात्मा ने अग्रणी किया। किसलिए? सृष्टि पर पवित्रता का रामराज्य स्थापित करने के लिए और यह सत्य है कि मातृ-शक्ति के सिवाय मानव को पवित्र करने की सामर्थ अन्य किसी में भी नहीं है। ऐसा देखा गया कि पवित्रता की शक्ति नारी में अधिक है।

कई दीन-हीन और दुर्बल मन वाले संन्यासी और विद्वान अपनी कमज़ोरियों को प्रत्यक्ष करते हुए कहते हैं कि नारी जाति ही ऐसी है कि उसे देखकर ही मन चलायमान हो जाता है। परन्तु हम उनसे पूछते हैं कि जिन शक्तियों व देवियों के वो भक्त हैं, क्या उनके सुन्दर चित्र देखकर भी उनका मन दूषित होता है? या उनके दूषित मन की वृत्तियाँ भी निर्मल हो जाती हैं? तो ये शक्तियाँ और देवियाँ कब थीं व कौन थीं? थीं तो वे भी नारी ही, परन्तु उनका सम्बन्ध शिव से था। वो पवित्र थीं। तो जबकि नारी स्वरूप शक्ति व देवियों का भी है तो नारियों के समूह को किसी संस्था का संचालक देखकर उनकी पवित्रता में संशय करना बुद्धिमानी है या अपनी कलुषित भावनाओं का स्पष्ट परिचय।

कई मनुष्य, कई विद्वान संन्यासी हमसे कहते हैं कि जब हम जंगल में रहकर भी ब्रह्मचर्य को कठिन महसूस करते हैं। जब कि आद्य शंकराचार्य जैसे विद्वानों ने भी नारी के निषेध की बात कही है, फिर आप सभी नारियों के समूह में रहकर ब्रह्मचर्य का दावा कैसे करते हैं।

हम उनसे पूछते हैं कि क्या कोई पतित मनुष्य ब्रह्मचर्य का दावा कर सकता है? जिसके पास ब्रह्मचर्य न हो, क्या वह दूसरों को ब्रह्मचर्य का उपदेश कर सकता है, पवित्रता के लिए प्रेरित कर सकता है? इस ईश्वरीय विश्व-विद्यालय का समस्त कार्य तो प्रत्यक्ष है, यहाँ कुछ भी गुप्त नहीं, और इनकी तो सारे विश्व को चुनौती है। जिसे संशय हो, वो प्रत्यक्ष आकर देखे। हाथ कंगन को आरसो क्या?

ऐसे कई संशय बुद्धि वाले मनुष्यों ने इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय की छान-बीन की ओर पाया यहाँ पवित्रता का उमड़ता हुआ सागर जिसके आगे कुछ ही समय में समस्त विश्व को झुकना पड़ेगा। इस ईश्वरीय विश्व-विद्यालय का खान-पान, रहन सहन, वस्त्र इसकी पवित्रता के प्रतीक हैं। यहाँ की मर्यादाएं और नियम प्रत्यक्ष प्रमाण है यहाँ की श्रेष्ठतम

धारणाओं के। परन्तु इतना प्रत्यक्ष कार्य होते भी अगर कोई व्यक्ति यहाँ की पवित्रता में संशय रक्खे तो हम उसे केवल दुर्भाग्यशाली ही कहेंगे।

यहाँ की दिनचर्या, इनके उच्चतम चरित्र का उदाहरण है। भोगी मनुष्य देर तक सोते हैं। कोई भी पतित प्राणी प्रातः ४ बजे से पूर्व नहीं उठ सकता। यहाँ ३.३० बजे प्रातः उठना और योग अभ्यास करना—क्या वे भोगियों का काम है। कभी-कभी विचार आता है कि कितनी तामसिक बुद्धि है मनुष्य की, जो ऐसे श्रेष्ठ चरित्रवान नर-नारियों के चरित्र पर भी लांछन लगाने में वह अपना बड़प्पन समझता है।

जो विचारवान व गम्भीर विदूषक है वो समझ सकते हैं कि इतना विशाल कार्य क्या बिना पवित्रता की शक्ति के चल सकता है। जहाँ भ्रष्टाचार होगा, वहाँ तो रात दिन कलह-कलेश होगा, फूट होगी, वहाँ संगठित शक्ति नहीं हो सकती। जिन लोगों ने इस ईश्वरीय विश्व-विद्यालय का प्रशासन देखा है वो जानते हैं कि यहाँ का स्वअनुशासित प्रशासन पवित्रता के कारण ही है और तब ही वो गौरव के साथ कहते हैं कि अब तो भारत की बागडोर केवल ब्रह्माकुमारियाँ ही सम्भाल सकती हैं।

इस विश्व के नव-निर्माण के कर्त्तव्य में अनेकों ने अवरोध पैदा किये और सोचा कि इस आन्दोलन को दबा दिया जाए क्योंकि उन्होंने समझा था कि नारियाँ तो अबला हैं, वो पुरुषों के आगे क्या कर सकेंगी ? परन्तु पवित्रता की शक्ति के आगे भौतिक शक्तियाँ असफल होती हैं और यही कारण है कि ब्रह्माकुमारियों के बढ़ते प्रवाह को न कोई रोक सका और न रोक सकेगा।

किसी भी धर्म की स्थापना पवित्रता के बल से ही होती है। कुछ लोग ब्रह्माकुमारियों का भी एक सम्प्रदाय समझते हैं। उन्हें इस सत्यता का नहीं पता कि ये नया धर्म या नया सम्प्रदाय नहीं बल्कि ये उसी आदि सनातन देवी देवता धर्म की पुनः स्थापना है जो लोप हो चुका है। इसलिए यहाँ पवित्रता के बल से व ईश्वरीय बल से पुनः उसी आदि धर्म की स्थापना हो रही है।

कई रूढ़िवादी कहते हैं कि नये-नये सम्प्रदाय चमकते हैं और जल्दी ही नष्ट हो जाते हैं, वही हाल इनका भी होगा। हम उन्हें बता दें कि यह कार्य किसी मानवी शक्ति का नहीं है। इसके पीछे ईश्वरीय शक्ति का हाथ है, इसलिए इसका पतन नहीं, दिनों-दिन प्रत्यक्षता होगी। पतन तो उन सम्प्रदायों का हुआ जहाँ पवित्रता का कोई भी स्थान नहीं था। परन्तु यहाँ का तो मूल ही पवित्रता है।

इस ईश्वरीय विश्व-विद्यालय में पवित्रता का प्रथम स्थान है। यहाँ कोई भी वह व्यक्ति निवास नहीं कर सकता जो मन, वचन, कर्म से पवित्रता का साधक न हो। यहाँ मन तक और वृत्तियों तक पवित्रता का शृंगार कराया जाता है। जो ब्रह्मचर्य का पालन नहीं करता वह ब्रह्मावत्स नहीं कहला सकता।

लगभग ८०० कन्याओं व माताओं ने इस ईश्वरीय विश्व-विद्यालय को अपना जीवन समर्पित किया है। जो कि विश्व के सभी जाति व धर्मों की हैं। वो अनपढ़ या किसी के बहकावे में आने वाली नहीं हैं। वो मात-पिता जो इस ईश्वरीय विश्व-विद्यालय के विद्यार्थी हैं, मन से चाहते हैं कि वे अपनी पढ़ी लिखी उच्च चरित्रवाली कन्याओं को इस विश्व की सेवा में समर्पित कर दें। ये सभी विदुषी नारियाँ अपने जीवन को, संसार को श्रेष्ठाचारी बनाने के लिए ही तो समर्पित करती हैं। समझदार व्यक्ति इसी समर्पणता से इनके आदर्श चरित्र का अन्दाज़ा लगा सकता है।

हमारा हरेक मनुष्य से अनुरोध है कि वे इस ईश्वरीय विश्व-विद्यालय के घनिष्ठ सम्बन्ध में आयें और यहाँ की श्रेष्ठ शिक्षाओं को ग्रहण कर अपने जीवन को चरित्रवान व पवित्र बनायें और विश्व में पवित्रता व श्रेष्ठाचार की स्थापना में योगदान दें।

सूचना

हिन्दी में छोटे बच्चों के लिये 'अच्छे बच्चे' नामक एक दूसरी पुस्तक छप चुकी है। इसका मूल्य २ रुपये है। ज़ोन के स्टाक से मंगवा सकते हैं।

ब्रह्माकुमार-कुमारी कहते, हमको प्रभु पढ़ाते

(ले०—ब्रह्माकुमार मुन्नी लाल, बन्धु कटरा, आगरा)

आरती पहले उच्च स्वरों से
पण्डित जी चिल्लाये,
पूर्ण शक्ति से पुनः पुनः
घन्टी ज़ोर बजाये ॥
शंखनाद भी ऐसे कीन्हा,
जैसे डीज़ल इन्जन।
प्रतिमा को फिर देखने लागे
जागो - जागो दुःख भंजन ॥
सत्तरह वर्ष बीत चुके,
इस पूजा को करते।
फिर भी प्रभु, विकार हमारे
शीघ्र नहीं क्यों मरते ॥
कई हज़ारों बार कहा,
विषय - विकार मिटाओ।
निर्मल तन - मन मेरा कर दो,
सारे पाप मिटाओ ॥
मैं मूरख, खल, कामी कहते,
उमर बितायी सारी।
कितने निष्ठुर प्रभुवर हो,
नहिं सुधि लीन हमारी ॥
तीन सौ साठ मंत्र भी जपकर,
मीठा - मीठा भोग लगाउँ।
सदा जलाता घी का दीपक
बिना नहाये कभी न खाउँ ॥
लेकिन कैसे तुम स्वामी हो,
मिटाते नहीं भक्तों की ख़ामी को !
मैं न जानूँ कहाँ प्रभु तुम हो,
तुम्ही बताओ कौन प्रभु तुम हो ॥
शिवोहम् भी मैं रटता हूँ,
अहम् सो, सोहम भी कहता हूँ।
तुम्ही पूज्य हो, तुम्ही पुजारी,
फिर अन्तर क्या, बता दो सारी ॥
पत्नि बच्चों सहित मैं,
खूब व्रत करता हूँ।
तीन दिवस तक बिन खाये,
यदा - कदा रहता हूँ ॥
कभी कभी तो फलाहार कर
थोड़ा भोजन खाते।
सारा मुहल्ला घर में लाकर,
कीर्तन ज़ोर से गाते ॥
आज नहिं मैं दर से जाऊँ;
अपना-सा मुँह लेकर।
नहिं तो साफ़-साफ़ बतला दो,
पूजा में क्या चक्कर ॥
ऐसे हठ कर बैठे पण्डित
उन्हें ध्यान तब आया।
सारा जीवन पोथी पढ़ते,
नहिं प्रभु को पाया ॥
ब्रह्माकुमार—कुमारी कहते,
हम को प्रभु पढ़ाता।
अचरज की यह बात लगे,
मुझे समझ न आता ॥
भागे सपरिवार और झट,
सेवा-केन्द्र पर आये।
अपनी सारी व्यथा को,
साफ़-साफ़ बतलाये ॥
ब्रह्माकुमारी बहिनें बोलीं
प्यारे मीठे भ्राता।
संशय ठीक आप के सारे,
हमें समझ में आता ॥
अगर चाहते आप हैं,
संशय मन का जाये।
प्रभु के सारे ज्ञान को,
ठीक समझ हम पायें ॥
एक घड़ी के वास्ते
सात दिवत तक आओ।
सहज योग के ज्ञान से
स्वयं को देव बनाओ ॥
मानव जो दानव बना है,

(शेष पृष्ठ २४ पर)

स्वर लिपि का अर्थ

ब्रह्मा कुमारी गीता, जालन्धर, 'पंजाब'

प्रायः सर्वप्रथम छोटे बच्चों को 'अ, इ, उ आदि स्वर अक्षर माला का ही ज्ञान कराया जाता है ! फलस्वरूप पढ़ाई के अनूरूप ही उनका जीवन लक्ष्य होता है। उदाहणार्थ—बाल्यावस्था में उनको 'अ' 'अनार' 'आ' आम आदि ही सिखाया जाता है फलस्वरूप वह बड़ा होकर 'अनार' और 'आम' खाने योग्य ही बन पाता है। व दूसरे शब्दों में हम यूं भी कह सकते हैं कि उसका जीवन का ध्येय अपने जीवकोपार्जन के लिये किसी पद को ग्रहण कर, उस द्वारा धन एकत्र करना ही होता है। तथा वह अपने इस अमूल्य जीवन के श्रेष्ठ लक्ष्य से अनभिज्ञ ही रहता है। परिणाम स्वरूप आज का मानव धन एवं पद के होते हुए तथा सर्व भौतिक उपलब्धियाँ होते हुए भी वह अपने जीवन से सन्तुष्ट नज़र नहीं आता है। तथा अपने-आपको दुःखी एवं अशान्त ही महसूस करता है तथा उसके अर्न्तमन में कुछ प्राप्त करने की एक अभिलाषा ही बनी रहती है। परन्तु प्रश्न उठता है ऐसा क्यों ? तो उत्तर में यही कहना अधिक उचित होगा कि बाल्यावस्था में ही उसकी नींव कच्ची होने के कारण अपनी जीवन-नैय्या को न संभाल पाने के कारण उसका जीवन उसको स्वयं के लिये तथा समाज के लिये एक भार-स्वरूप ही प्रतीत होता है। या यह कहना भी अतिश्योक्ति न होगी कि उसका जीवन एक रेत के ढेर पर बनी बिल्डिंग के समान ही होता है तथा उसका सारा जीवन आशा-निराशा की लहरों में बहता रहता है। विपत्ति पड़ने पर उसके मुख से यही शब्द सुनाई देते हैं—"हे भगवान। हे दुःख-हर्ता, सुख-कर्ता प्रभो"। इन शब्दों का उच्चारण ही उसके मुख से प्रस्फुठित होता है। तथा मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारे आदि की शरण ही ग्रहण करता है। परन्तु जीवन में स्थायी प्राप्ति न होने पर, मानसिक सन्तुलन खो देता है, तथा उसको स्वयं पर भी विश्वास नहीं रहता और फलस्वरूप वह आध्यात्मिकता से भी विश्वास खो बैठता है। इसका सही कारण बाल्यावस्था में नैतिक शिक्षा से वंचित होना। अर्थात् शिक्षा में आध्यात्मिकता का होना अति आवश्यक है। अथवा शिक्षा और आध्यात्मिकता का आपस में उतना ही गहरा सम्बन्ध है जितना कि शरीर और आत्मा का। जिस प्रकार आत्मा के बिना शरीर बेकार हो जाता है, ठीक इसी प्रकार आध्यात्मिकता के बिना शिक्षा का भी कोई मूल्य नहीं रह जाता तथा एम. ए. क्लास पढ़ जाने पर भी उसका जीवन निःस्सार-सा ही प्रतीत होता है। तो आइये आज हम परमपिता के द्वारा प्राप्त आध्यात्मिक शिक्षा एवं सहज-राजयोग के आधार पर 'स्वर अक्षर माला' का आध्यात्मिक ज्ञान करें तथा उसे अपने व्यावहारिक जीवन में उतार कर सुख-शान्ति एवं पवित्रता सम्पन्न सुखद अनुभव करें—

'कविता'

छोटे 'अ' से 'अमर' कथा है,
बड़े 'आ' से 'आत्मा',
छोटी 'इ' से 'इस दुनिया का' मालिक है परमात्मा,
बड़ी 'ई' से 'ईश्वर' होता,
'उ' से 'उत्तम धर्म' है,
'ऊ' से 'ऊंचा' करने वाला होता अपना कर्म है,
'ए' से एक पिता है जग का,
'ऐ' से 'ऐसा' समझो सब,
'ओ' से 'ओंम' मंत्र है सच्चा,
'औ' से 'और' सब शास्त्रों का सार मिला,
'अं' से 'अन्त' समय है सबका,
'अः' से 'अहा' संगम सुहावना !

यह चित्र चन्द्रपुर में आयोजित बाल वर्ष समारोह के अवसर का है। इस अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम करने वाले भाई-बहनों का ग्रुप दिखाई दे रहा है।

यह चित्र वर्धा में आयोजित 'बाल वक्तृत्व स्पर्धा'के अवसर का है। सभा की अध्यक्षता संध्या सबाने ने की तथा प्रो० देशमुख एवं क्षिरसागर निर्णायक मण्डल के सदस्य थे।

पुरी में स्थित सेवा केन्द्र द्वारा तालानुआ साही में आयोजित कार्यक्रम में अरविंद धाम के शिक्षा केन्द्र के प्रधानाचार्य भ्राता पी० सी० मोहपत्रा प्रवचन कर रहे हैं। मंच पर वहां के बहनभाई बैठे है।

यह चित्र कलकत्ता में मनाए गए 'पिता श्री स्मृति दिवस' समारोहके अवसर का हैं। कलकत्ता विश्व-विद्यालय के उप-कुलपति तथा हाई कोर्ट के जज के साथ ब्र० कु० निर्मलशान्ता एवं आस्ट्रेलिया की बहन हैलन बैठी हैं।

यह चित्र बम्बई के रेडियो क्लब में आयोजित स्मृति दिवस समारोह के अवसर का है। चित्र में महाराष्ट्र के उच्च न्यायालय के जज भ्राता मसोदकरजी के साथ ब्र० कु० वृजेन्द्रा, पुष्पशान्ता 'नलिनी' भ्राता चार्ल्स (आस्ट्रेलिया) तथा रमेश शाह बैठे हैं।

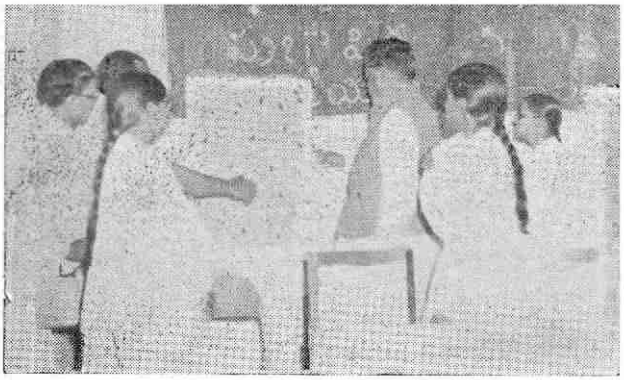

सिकन्द्राबाद में शिव जयन्ति पर मुख्य अतिथि भ्राता एम० बागा रेड्डी जी शिव बाबा के ट्रांस लाईट का उद्घाटन कर रहे हैं साथ में अन्य भाई-बहनें खड़ी हैं।

नीचे के चित्र में जगन्नाथपुरी में आयोजिन "विश्व नव-निर्माण" प्रदर्शनी में राधा वल्लभी मठ के महन्त महाराज कृष्ण चन्द्र जी प्रवचन कर रहे हैं। मंच पर मिश्राजी, बहिन निरूपमा, भ्राता महेश्वर जी बैठे हैं।

नीचे का चित्र दिल्ली के आदर्श नगर में शिव जयन्ती समारोह का है, मंच पर बायें से दायें ब्र० कु० चक्रधारी ब्र० कु० राज ब्र० कु० बृजमोहन, भ्राता मंगत-राम (कांउसिलर) बैठे हैं।

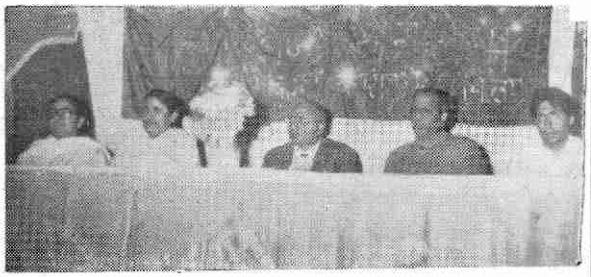

बेंन्कानाल में शिव जयन्ती पर राजमाता प्रवचन—करते हुए दिखाई दे रही हैं, उनके साथ राजमाता के पुत्र व ब्र० कु० पुष्पा मंच पर बैठे दिखाई दे रही हैं।

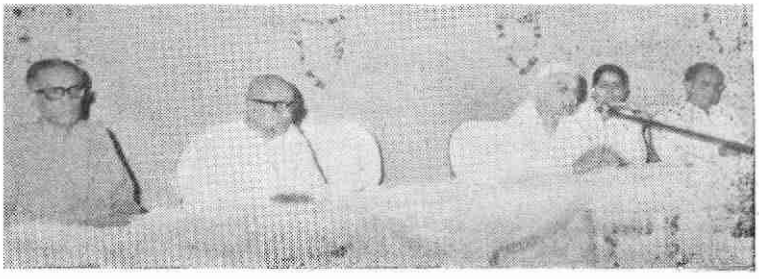

कलकत्ता में शिव रात्रि के उपलक्ष में बहिन निर्मलशान्ता जी प्रवचन कर रही हैं, मंच पर मुख्य अतिथि भ्राता सच्चिदानन्द महाराज, गोविन्द भाई कानन बहन व रमेश भाई बैठे हैं।

'स्वयं की स्थिति द्वारा सेवा'

ब्रह्मा कुमार किरणपाल (मुजफ्फरनगर)

आधुनिक युग हम सभी आत्माओं (जो कि ज्ञानी हैं) के लिए पुरुषोत्तम संगम युग है। इस युग में कलियुग और सतयुग का तो संगम (मिलन) होता ही है, परन्तु इसके साथ-साथ इस संगम युग में रूहानी बाप और रूहानी बच्चों का मिलन, सर्व-ब्राह्मण कुल भूषणों का मिलन, दुःख और सुख का मिलन, पवित्रता और अपवित्रता का मिलन, शान्ति और अशान्ति का मिलन, असुरों और भावी देवताओं का मिलन भी होता है। कहने का भाव यह है कि यह केवल दो युगों का ही संगम नहीं बल्कि उपरोक्त अनेक बातों का संगम भी होता है।

प्रत्येक आत्मा चाहती भी है कि हमारे जीवन में अशान्ति, दुःख अपवित्रता, आसुरी गुण एवं अधर्म न होकर सुख, शान्ति, पवित्रता, दिव्य गुण एवं सच्चा धर्म हो। परन्तु प्रकृति के तत्वों में तमोगुण-प्रधान होने के कारण उपरोक्त बातों का अत्यधिक आत्माओं में अभाव है। अभाव सेवा की जननी है। अर्थात अभाव के स्थान पर सम्पन्नता स्थापित करने के लिए सेवा की आवश्यकता है। या यों भी कह सकते हैं कि सेवा (Service) अभाव में ही निहित है क्योंकि जहाँ अभाव होता है वहाँ सेवा (Service) करना आवश्यक होता है। इसलिए अभाव ही सेवा (Service) को जन्म देता है। आधुनिक काल में अनेक प्रकार के अभाव जीव आत्माओं के सामने हैं। जिसे दूर करने के लिए राजनैतिक नेता, सामाजिक कार्यकर्ता या अन्य लोग, जो अपने को धर्म के ठेकेदार समझते हैं, ऐसे लोग अपनी क्षमता के अनुसार प्रयास करते हैं। परन्तु आज हम देखते है कि इन सभी आत्माओं में सुख, शान्ति एवं पवित्रता का अभाव है। अभाव-युक्त आत्माएँ दूसरी आत्माओं को सम्पन्न नहीं बना सकती हैं। अतः अभाव युक्त आत्माओं को सम्पन्न बनाने के लिए ऐसे किसी स्रोत की आवश्यकता है जो स्वयं अभाव-मुक्त हो।

यदि हम ऐसे किसी स्रोत पर दृष्टि डालें तो सिर्फ़ परमपिता परमात्मा ही ऐसे स्रोत हैं, जो ज्ञान का सागर, सुख, शान्ति एवं पवित्रता का सागर है। तो इस प्रकार इस अभाव को समाप्त करने का स्रोत या तो परमपिता परमात्मा हैं या कुछ अन्य उन आत्माओं को कह सकते हैं जिन्होंने स्रोत से अभाव समाप्त करने की शक्ति प्राप्त की हो। ऐसे केवल हम ही बच्चे हैं जिन्होंने संगम युग पर परमपिता परमात्मा से ज्ञान एवं योग के आधार से ऐसी शक्ति प्राप्त की है। हम आत्माओं में भी सभी आत्माओं की क्षमता नम्बरवार है। अतः हम आत्मायें स्वयं की स्थिति के द्वारा ही अन्य आत्माओं की सेवा कर सकते हैं।

मीठे-मीठे बाबा ने हम बच्चों को सेवा करने के साधन ३ प्रकार के बतायें हैं—१. मनसा, २. वाचा, ३. कर्मणा।

१. मनसा

मन आत्मा की ३ शक्तियों में से एक शक्ति है और वास्तव में आत्मा का उत्थान और पतन मन के ऊपर ही आधारित है। क्योंकि आत्मा की संकल्प शक्ति का नाम ही मन है। अतः यदि मन विकल्पों को जन्म देगा तो आत्मिक पतन होगा और यदि मन शुद्ध-संकल्पों में रमण करेगा तो आत्मिक उत्थान होगा। इसके साथ-साथ शुद्ध संकल्पों द्वारा उत्पन्न हुए अनुकम्पन (Vibrations) वायु मण्डल में फैलेंगे जो कि वायुमण्डल को शुद्ध करेंगे। इससे उस वायु-मण्डल में रहने वाले जीवों में और प्रकृति के तत्वों में भी सतोप्रधानता आयेगी। वास्तव में मन द्वारा किये गये शुद्ध संकल्पों के आधार पर ही हमारी स्थिति अच्छी बन सकती है, और अच्छी स्थिति से सतोप्रधान वायु मण्डल बन सकता है और सतो-प्रधान वायुमण्डल से प्रकृति के तत्त्व, मनुष्य आत्मायें और जीवनधारियों में सतोप्रधानता फैलाने की सेवा हो सकती है। इसके अतिरिक्त, यदि स्वयं की स्थिति बहुत ऊंची है तो अनेकों आत्माओं को हम साक्षा-

त्कार कराकर या संकल्पों की टचिंग कराकर भी सेवा कर सकते हैं। उदाहरणार्थ

जैसे हमारे मीठे बाबा ने अनेक आत्माओं को साक्षात्कार कराये हैं। अव्यक्त बाप-दादा ने भी हम बच्चों को बताया है कि बच्चे यदि तुम लाईट हाऊस (Light house) की स्थिति में हो तो किसको भी साक्षात्कार हो सकता है।

२. वाचा

वास्तव में वाचा भी अन्य आत्माओं की सेवा में बहुत सहायक है परन्तु जैसी मनसा वैसी स्थिति और जैसी स्थिति वैसी वाचा। उदाहरणार्थ यदि हमारी स्थिति म्यूजियम समझाते हुए या प्रदर्शनी समझाते हुए शक्ति-सम्पन्न (Powerful) और प्रेम-सम्पन्न (loveful) है तो साधारण बोल भी शक्ति (Power) और स्नेह (love) से युक्त होने के कारण दर्शकों और श्रोताओं के लिए संजीवनी बूटी का कार्य करेंगे और निर्बल आत्मायें उनको वरदान के रूप में ग्रहण कर, शक्ति प्राप्त कर सकती हैं।

३. कर्मणा

वास्तव में जैसी अपनी स्थिति होती है कर्म भी उसी आधार पर होते हैं। जैसे यदि योग युक्त स्थिति में कार्य किया जाता है तो श्रेष्ठ बन जाता है और यदि कार्य योग स्थिति में किया हुआ नहीं है तो वह विकर्म बन जाता है तो श्रेष्ठ स्थिति से ही कर्मों में श्रेष्ठता आती है, जो कि अनेक आत्माओं को शिक्षा दे, उनकी स्थिति को भी श्रेष्ठ बनाने का कारण बन जाती है। जैसे बाबा कहते हैं कि बच्चे, हमेशा कार्य करते समय सोचो कि "जैसा कार्य मैं करूंगा, मुझे देख सब करेंगे।" यही कारण है कि जिन आत्माओं के कार्य में श्रेष्ठता होती है, वह अनेकों के लिए उदाहरण रूप बन उद्धार मूर्त्त बन जाती है।

इस प्रकार हम अपनी स्थिति द्वारा अनेक आत्माओं की सेवा कर सकते हैं।

हिम्मत और उल्लास

ब्रह्मा कुमारी वसुधा, चण्डीगढ़

हम नन्हें मुन्ने बच्चे हैं, ईश्वर की सन्तान।
घर-घर ज्ञान का दीप जला कर बनना है महान्॥
पाँच विकारों की जंजीरों को,
जड़ से तोड़ भगाएंगे।
अन्धविश्वास अरू कटु विचारों में,
नया मोड़ फिर लाएंगे।
नया आत्म विश्वास जगाकर फिर सुख से
लेंगे विश्राम।
हम नन्हें-मुन्ने बच्चे हैं, ईश्वर की सन्तान॥
राम राज्य के सपने लेकर,
बापू गाँधी भी चले गए।
नानक-बुद्ध-ईसा ने भी
स्वर्ग स्थापन के यत्न किए।
न हटा सका कोई भ्रष्टाचार को नवयुग करेंगे
हम निर्माण।
हम नन्हें-मुन्ने बच्चे हैं, ईश्वर की सन्तान॥
नई चेतना नए ज्ञान से
नया विश्वास बढ़ाएंगे।
कदम-कदम पर श्रीमत लेकर,
नवयुग की नींव लगाएंगे।
नया मोड़ देंगे विश्व को, बन के स्वयं प्रमाण।
हम नन्हें-मुन्ने बच्चे हैं, ईश्वर की सन्तान॥
उठो! खड़ा महाकाल है,
आँखें मूँद नहीं बैठो।
उठो जागो। सन्मार्ग ढूंढ़ लो,
अब तक खोया, अब लूटो।
त्यागो अरे विलासी जीवन, करके अमृत का पान।
हम नन्हें-मुन्ने बच्चे हैं ईश्वर की सन्तान॥

इच्छाओं के नियन्त्रण की आवश्यकता

ब्रह्माकुमारी मंजु, सिकंदराबाद, आन्ध्र प्रदेश

वर्तमान युग को यदि 'इच्छा युग' की संज्ञा दी जाय तो अतिशयोक्ति न होगी क्योंकि आज चारों ओर इच्छाओं का ही बोलबाला है। हर व्यक्ति यही कहता है कि जो मेरी इच्छा होगी वही पहनूंगा, करूंगा, देखूंगा, कहूंगा आदि। मैं किसी का गुलाम थोड़े ही हूं जो किसी की इच्छा से चलूंगा। लेकिन शायद आज मानव यह नहीं समझ रहा है कि इच्छा से चलना कोई स्वतन्त्रता नहीं है। इच्छा ही सबसे बड़ी जंजीर है अथवा इच्छा ही ऐसा घातक विष है जो सर्व अच्छाइयों को नष्ट कर देता है। जैसे शास्त्रों में भी एक पौराणिक कथा है कि जब देवताओं को भी भोगों को भोगने की इच्छा हुई तो वे वाममार्ग में गये जिसका परिणाम यह हुआ कि उनका स्वर्गिक सुख एवं राज्य-भाग सब क्षीण हो गया। इसी संदर्भ में बाइबिल में भी कहानी है कि एडम और ईव जिस बगीचे में रहते थे वहां पर एक पेड़ पर ऐसा फल लगा हुआ था जिसको भगवान ने खाने के लिए मना किया था लेकिन जब उस फल को खाने की इच्छा हुई तो उन्होंने वह फल खा लिया जिसके परिणाम-स्वरूप उनमें शैतान ने प्रवेश किया जिससे उनकी सुख शान्ति नष्ट हो गई। इसी प्रकार आज प्रत्येक मानव किसी न किसी इच्छा का गुलाम है। कभी-कभी मानव सिगरेट पीते-पीते उसका इतना तो आदी हो जाता है कि सिगरेट उस पर अपना अधिकार जमा लेता है तो कभी शराब पीना शुरू करके इतना तो शराब उसको अपना गुलाम बना लेती है जो उसको छोड़ना चाहकर भी नहीं छोड़ पाता है। देखिये तो सही पांच फुट के विवेकशील प्राणी को एक इंच की सिगरेट पीने मात्र की इच्छा नष्ट कर देती है। इस प्रकार आज अज्ञान, निराशा और कुसंग के कारण इच्छायें बढ़ती गईं और आज तो इच्छाओं का विस्फोट हो रहा है जिसके कारण पारिवारिक सम्बन्ध, राजनैतिक सम्बन्ध, व्यवसायिक सम्बन्ध, आर्थिक सम्बन्ध, राष्ट्रीय सम्बन्ध बिगड़ चुके हैं जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण आज हम देख रहे हैं कि विषय भोगों की इच्छा की अति के कारण जनसंख्या विस्फोट, बलात्कार, अत्याचार, अनाचार आदि-आदि हो रहा है और सारे विश्व में सबसे अधिक शक्तिशाली बनने की इच्छा का प्रत्यक्ष प्रमाण हमारे सामने रूस और अमेरिका है जो एक दूसरे से आगे बढ़ने की अभिलाषा के कारण आज इतनी अणु शक्ति तैयार कर ली है जिसको नियन्त्रण नहीं किया जा सकता है। इसका निश्चित और भयंकर परिणाम महाविनाश है, लेकिन महाविनाश से पूर्व हमें क्या करना है? इस पर अवश्य विचार करना चाहिए। क्योंकि महाविनाश की सामग्री बनाने वाले भी यही कहते हैं कि हमने विश्व शान्ति के लिए बनाई है परन्तु भय से कभी शान्ति नहीं होती है। भय तो आंतक को लाने वाला है और इसके साथ-साथ मानव ने सुख के लिए पत्थर युग को बिजली-युग में बदल दिया। समय पर ऐसा नियन्त्रण किया जो धरती पर सड़कें, पटरियां तो बसों, रेलगाड़ी के लिये बनाई परन्तु जब इससे भी काम नहीं चला तो आकाश और सागर पर भी सड़के बनाई अर्थात हवाई जहाज़ और जहाज़ बनाये। लेकिन ज्यों-ज्यों दवा की मर्ज़ बढ़ता ही गया क्योंकि यह सब परिवर्तनशील है, तो भला परिवर्तनशील विनाशी पदार्थों से सदा काल अविनाशी सुख कैसे मिलेगा? क्षण भंगुर सुख के बाद फिर वही बेचैनी, क्योंकि सुख का आधार सिर्फ़ यह साधन नहीं लेकिन अपने कर्म हैं। विश्व का अटल नियम है "जो करेगा सो पायेगा।" यदि इन इच्छाओं को पूर्ण करने में लगे रहे तो आवश्यकताओं से भी वंचित हो जायेंगे।

"इच्छायें बेलगाम होती हैं"

किसी ने ठीक ही कहा है, "यदि इच्छा घोड़े के रूप में होती तो कोई मूर्ख ही उस पर चढ़ता क्योंकि बेलगाम घोड़े पर कोई बुद्धिमान चढ़ना नहीं चाहेगा।" अतः अब इस दुःख देने वाली भयंकर इच्छाओं को नियन्त्रण करने के लिए यह जानना

जरूरी है कि इच्छा क्या है ? कैसे उत्पन्न होती है ? तथा उसका निवारण क्या है ? इच्छा है रसना। रसना लेने की शक्ति इस विनाशी शरीर में नहीं अपितु चैतन्य ज्योति बिन्दु आत्मा में है जो कि इस शरीर की कर्मेन्द्रियों द्वारा व्यक्ति, वस्तु, वैभव से लेती है लेकिन आत्मविस्मृति हो जाने के कारण वास्तविक इच्छाओं से परे हो गये। स्वयं को देह समझने के कारण दैहिक इच्छाओं के गुलाम बन गए। आत्मा की वास्तविक इच्छा है "सम्पूर्ण पवित्रता, सुख शान्ति।" जैसे पानी का काम बहना है तथा जीवन प्रदान करना है ; जब तक वह बहता हुआ खेतों को सींचता हुआ जीवन दान करता है तब तक तो ठीक है लेकिन जब उसका वेग बाढ़ में बदलकर जीवन हरने वाला हो जाता है तो उसको नियन्त्रण करना ही पड़ता है। इसी प्रकार से आज की बढ़ती हुई इच्छाओं पर नियन्त्रण करना ही होगा। आत्मिक इच्छायें पूर्ण ही तब होगी जब "मैं कौन हूं?" का ज्ञान होगा क्योंकि आज मानव यह समझता है कि इन इच्छाओं को पूर्ण करना बड़ा कठिन है। अरे ! कठिन जो था वह तो कर लिया, चन्द्रमा, मंगल ग्रह पर पहुंच गये, तत्वों को नया मोड़ दिया तो क्या वही मानव अपनी ही सुख शान्ति और सन्तुष्टता के लिए अपनी इच्छाओं को नया मोड़ नहीं दे सकता है ? अवश्य दे सकता है। इच्छाओं के नियन्त्रण के लिए विस्तार को सार में लाना होगा। इच्छाओं के स्वरूप को परिवर्तन करना होगा। परिवर्तन के लिए भौतिक को आध्यात्मिकता में, विनाशी को अविनाशी में, विकारी को निर्विकारी में। विकारी, विनाशी दैहिक इच्छायें हैं काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, आलस्य, फैशन, ईर्ष्या आदि और आत्मिक इच्छा है ज्ञान, प्रेम, पवित्रता, सुख, शान्ति, आनन्द, शक्ति। स्वयं को देह समझने के कारण काम और कामनाओं को जन्म मिला और इसकी पूर्ति न होने के कारण क्रोध, लोभ, मोह सब कुछ बढ़ता गया। इसलिए अब आप और विश्व पर जो चारित्रिक तथा सर्व समस्याओं का संकट आया है उसको हमें दूर ही करना होगा उसके लिए चाहिए—**आत्म-ज्ञान**। यह शरीर तो विनाशी है अविनाशी आत्मा मन, बुद्धि, संस्कार सहित चैतन्य पुंज आत्मा है, शान्ति और पवित्रता ही आत्मा का धर्म है। इसलिए आज मानव भी हर रीति से सुख, शान्ति चाहता है इसके लिए **काम** को शुभ कामना में बदलो, **क्रोध** को शान्ति से जीतो, **लोभ** आवश्यकता तक सीमित करो लेकिन दिव्यगुणों, सम्पूर्ण अविनाशी ज्ञानधन से लोभ करो, **मोह** सम्बन्धों से नहीं लेकिन अपने कर्मों से करो क्योंकि सृष्टि तो एक रंगमंच है आप अपने वास्तविक घर सूरज, चांद, सितारों के भी पार परमधाम से यहाँ पार्ट बजाने आये हो अकेले आये थे अकेले जाना है, लेकिन सुकर्मों के साथ आये थे और उसी के साथ ही जाना है तो जिससे प्यार होता है उसको बिगाड़ा नहीं जाता है लेकिन सुधारा जाता है, तो अब कर्मों को सुधारो। अहंकार विनाशी रूप, रंग, धन का नहीं, आप ऐसी अविनाशी हस्ती हैं जिसको काल नहीं खा सकता है, अग्नि जला नहीं सकती है तो देहभान को स्वमान में बदलो और इससे भी उच्च स्वमान है कि आप उस परमपिता परमात्मा विश्वकल्याणकारी 'शिव' की सन्तान हो जो सदा इच्छाओं से मुक्त, गुणों का सागर है। वह सर्व आत्माओं का **परमपिता, परमशिक्षक**, परमसदगुरु है—अजन्मा, अभोक्ता, अकर्त्ता, अशरीरी, ज्योति बिन्दु स्वरूप है तथा परमधाम के निवासी हैं। ज्ञान का सागर, प्रेम का सागर, पवित्रता का सागर तथा दया का सागर आदि गुणों के सिन्धु हैं। जिनकी दिव्य स्मृति ही आपको गुणवान और विनाशी इच्छाओं से मुक्त करेगी। अतः बाहरी वस्तुओं और व्यक्तियों के बदलते हुए स्वरूप का हमें दास नहीं बनना है परन्तु अपने को इसका मालिक समझना है। अतः चलचित्र के समान उभरते रंग-बिरंगे चित्रों को, बदलते दृश्यों और चलती-फिरती पुतलियों को देखते हुए भी अपने मालिकपने की हैसियत को न भूलो। **यदि इनके बदलते मूल्य और अपने स्थाई रूप का अन्तर दृष्टि से ओझल न हो तो हम हर इच्छा पर विजय प्राप्त कर सकते हैं।** अतः अन्त में इन्हीं शब्दों के साथ समाप्त करती हूं कि अब स्वयं की सम्पूर्ण सुख शान्ति के लिए अभी से ही 'इच्छा मात्रं अविद्या' बन विश्व कल्याण करो।

एक ज्ञान-चर्चा

ब्रह्माकुमार सूरज कुमार, मधुबन, आबू

वो कहते थे कि ब्रह्माकुमारियों के पास ज्ञान कहाँ से आया, वो तो न वेदों को मानती, न शास्त्रों को। मनुष्यों को लुभाने के लिए मिट्टी की गुडियाएँ बनाकर रखती हैं। उन्हें क्या पता कि इन ब्रह्मा कुमार-कुमारियों को ज्ञान देने वाला स्वयं ज्ञान सागर परमात्मा है। जिन्हें स्वयं भगवान पढ़ाता हो, उन्हें वेदों की क्या आवश्यकता ?···

अहंकार मनुष्य के पतन का मुख्य कारण है। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने कुछेक दार्शनिक गुत्थियों को सुलझा दिया था। उन्होंने कई बार अपने व्याख्यानों में कहा था—"ऐसे मत समझना कि मैंने जो कहा है, वही सम्पूर्ण सत्य है ; हो सकता है कि आगे चलकर मुझसे भी बड़ा कोई विद्वान आये जो और भी रहस्य स्पष्ट करे।" महर्षि के ये सत्य वचन विशालता के प्रतीक थे। परन्तु पीछे चलकर आर्य समाज के विद्वान स्वयं को सम्पूर्ण ज्ञान के ज्ञाता समझने लगे और दूसरों की हर बात का खण्डन करना ही अपना प्रथम व श्रेष्ठ कर्त्तव्य मानने लगे—परिणाम हमारे सामने है।

पिछले दिनों हरिद्वार में कई आर्य समाज के विद्वानों से हमारी ज्ञान-चर्चा हुई। उसका संक्षिप्त उल्लेख हम यहाँ करेंगे। हमने देखा कि यद्यपि आर्य समाज मनुष्य के सामाजिक जीवन में कुछ सुधार ला पाया है तो भी पवित्रता को उन्होंने भी गोण स्थान दिया है।

एक विद्वान जो हमारे अति स्नेही बन गये थे ; हमने स्नेह से उनसे पूछा कि "जब से आर्य समाज की स्थापना हुई और आज तक आर्य समाज का उत्थान हुआ या पतन ?"

महाशय जी छटपटाये। गुरु कुल काँगडी विश्व विद्यालय, (हरिद्वार) में आर्य समाज के प्रत्यक्ष पतन को देखते हुए भी, निर्बल से वचनों से बोले—"उत्थान हुआ। अनुयायियों की संख्या बहुत बढ़ गई, विश्व-व्यापी धर्म प्रसिद्ध हो गया।"

हमने पूछा—इस संसार का पतन हुआ या उत्थान ?

बोले—ये तो सदा ऐसा ही चलता है। अच्छे-बुरे लोग सदा ही रहे हैं। हाँ थोड़ा-बहुत नैतिक पतन तो हुआ है।

महाशय जी को संसार का महापतन भी नज़र नहीं आ रहा ! हमने कहा कि किसी मत के अनुयायियों की संख्या बढ़ जाना ही उसका उत्थान नहीं कहलाता। बल्कि उनमें सैद्धान्तिक परिपक्वता कितनी आई है उनमें साधना, त्याग व पवित्रता कितनी बढ़ी है—यही मापदण्ड है किसी के उत्थान का।

आर्य समाज के एक प्रवीण तर्क-शास्त्री से हमारी इस प्रकार ज्ञान चर्चा हुई। महाशय जी एक रिटायर्ड प्राध्यापक हैं और आर्य समाज की किसी पत्रिका का सम्पादन करते हैं।

ब्रह्माकुमार—आप मानते हैं कि सभी शरीरों में आत्माएँ भिन्न-भिन्न हैं ?

आर्य समाजी भाई—हाँ, सभी शरीरों में भिन्न-भिन्न आत्माओं का निवास है।

ब्रह्माकुमार—उनमें भिन्नता क्या है ?

आर्य समाजी—कर्मों की ही भिन्नता है।

ब्रह्माकुमार—प्रश्न वैसा ही रह गया। कर्मों की भिन्नता का कारण क्या है ?

आर्य समाजी—विचार मग्न।

ब्रह्माकुमार—इसका उत्तर आप नहीं दे सकते। शायद ही आपने इसके बारे में कभी सोचा भी हो। वास्तव में मन बुद्धि संस्कार आत्मा में ही है और सभी आत्माओं में भिन्न-भिन्न मन-बुद्धि हैं। परन्तु क्योंकि आप मन, बुद्धि को आत्मा से भिन्न मानते हैं, इसलिए आप इसका उत्तर नहीं दे सकते।

आर्य समाजी—मन-बुद्धि तो प्रकृतिकृत इन्द्रियाँ हैं, उन्हें आत्मा में कैसे माना जाए ?

ब्रह्माकुमार—अगर वो प्रकृतिकृत हैं तो वो शरीर में कहाँ हैं ?

आर्य समाजी—मस्तिष्क पर हाथ रखते हैं।

ब्रह्माकुमार—ये बुद्धि नहीं, ये तो मस्तिष्क है। बुद्धि सूक्ष्म शक्ति है, इसीलिए आप भी मन्त्रों द्वारा परमात्मा से 'दिव्य बुद्धि' माँगते हैं। मन भी अति सूक्ष्म शक्ति है।

अगर मन-बुद्धि को आत्मा से भिन्न मानोगे तो आत्मा की चेतना क्या है? मन-बुद्धि ही तो उसकी चेतना है।

आर्य समाजी—हाँ भान तो ऐसा ही होता है कि मन-बुद्धि आत्मा से अभिन्न ही हैं परन्तु सूत्रों में इसे प्रकृतिकृत कहा है।

ब्रह्माकुमार—देखिये; आप भी परमात्मा को निराकार मानते हो; उसे सर्वज्ञ भी मानते हो और बार-बार कहते हो, 'प्रभु की इच्छा'। इससे स्पष्ट है कि परमात्मा में भी मन-बुद्धि है। फिर आत्मा में क्यों नहीं?

आप आत्मा को कर्त्ता भी मानते हैं और कर्म तो मन बुद्धि द्वारा ही होते हैं, फिर अगर मन-बुद्धि को आत्मा से भिन्न मानेंगे तो आत्मा को कर्त्ता कैसे मानोगे?

आर्य समाजी—गम्भीर मुद्रा में।

ब्रह्माकुमार—आत्मा का स्वरूप क्या है?

आर्य समाजी—निराकार है, उसका कोई भौतिक स्वरूप नहीं।

ब्रह्माकुमार—परन्तु आप तो मानते हैं कि वह शरीर में एकदेशी है; तब तो उसका सूक्ष्म स्वरूप अवश्य ही होना चाहिए।

आर्य समाजी—हाँ सूक्ष्म स्वरूप तो प्रतिभासित होता भी है।

ब्रह्माकुमार—आप यह भी मानते हैं कि परम आत्मा भी एक आत्मा ही है।

आर्य समाजी—बिल्कुल···

ब्रह्माकुमार—तब तो परमात्मा का रूप भी अति सूक्ष्म ही होना चाहिए।

आर्य समाजी—हाँ! वह तो सूक्ष्मातिसूक्ष्म है।

ब्रह्माकुमार—तो महशय जी, जिसका रूप हो, वह सर्वत्र व्याप्त कैसे हो सकता है? आपने उसे सर्व-व्यापी कैसे मान लिया?

महशय जी···विचार में पड़ गये।

ब्रह्माकुमार—यह तो बड़ी भारी भूल हो गई। इसी कारण मनुष्य उससे योग न लगा सका और मनुष्य का पतन हुआ।

महाशय जी को विचार आया···बोले

"देखिये, ये सूर्य, चाँद, तारे, नक्षत्र, कितने सुन्दर क्रम से घूम रहे हैं। इनको गति कौन दे रहा है? इनको नियन्त्रित कौन कर रहा है। इसलिए परमात्मा को सर्वत्र मानना ही पड़ता है। उसने इतनी विशाल रचना की। सर्वत्र व्याप्त हुए बिना, वह यह कार्य कैसे करता?

ब्रह्माकुमार—वाह महाशय जी वाह! क्या रचयिता कभी अपनी रचना में व्याप्त होता है? यदि यह मान भी लिया जाय कि परमात्मा ही इन्हें चलाता है। क्या आज भी एक स्थान पर बैठा वैज्ञानिक, दूर जाते हुए रॉकेट या मिसाइल्स को स्वेच्छा से नहीं चला सकता? क्या सर्वशक्तिमान परमात्मा अपनी संकल्प शक्ति से एक स्थान पर बैठा सब-कुछ नहीं कर सकता? क्या परमात्मा धरती और चाँद को हाथ से पकड़ कर चला रहा है? इस तर्क में तो कोई दम नहीं।

आर्य समाजी—अगर वह सर्वत्र न हो, तो मनुष्य के अच्छे-बुरे कर्मों का फल कैसे देगा?

ब्रह्माकुमार—बन्धु, वह तो त्रिकाल दर्शी है, उसे एक-एक के पास रहकर उनके कर्मों को देखने की आवश्यकता नहीं।

'कर्म व फल'—यह चक्कर स्वतः ही चलता है। परमात्मा ने तो अपनी रचना के कुछ विधान निश्चित कर दिये। फिर यह चक्र स्वतः ही उन नियमों के अनुसार चलता रहता है। क्योंकि आपको मन बुद्धि व संस्कार के चक्कर का स्पष्टीकरण नहीं है, इसलिए आपने यह ही मान लिया कि परमात्मा ही सर्वत्र व्याप्त होकर सभी को दण्डित कर रहा है तब तो परमात्मा रात-दिन बड़ा ही व्यस्त रहता होगा। सदा-मुक्त परमात्मा को भी यह चक्कर।

यह सृष्टि-चक्र कैसे चलता है, इसका कुछ भी स्पष्टी-करण वेदों में नहीं है; इसलिए आपने परमात्मा को ही सर्वत्र मान लिया।

आर्य समाजी—यह कार्य स्वतः ही कैसे होगा?

ब्रह्माकुमार—चलो, अगर आप परमात्मा को दण्ड देने वाला भी मानते हो तो भी उसे सर्वव्यापी होने की आवश्यकता नहीं। वह तो पहले ही सर्वज्ञ है।

दूसरी बात—अगर चेतन परमात्मा सर्वत्र है, तो उसकी चेतनता सर्वत्र क्यों नहीं ? फिर जड़ वस्तुएँ क्यों हैं ?

आर्य समाजी—नहीं, चेतनता तो सर्वत्र है।

ब्रह्माकुमार—क्या पत्थर में, सूखी लकड़ी में भी उसकी चेतनता है ?

आर्य समाजी—हाँ, देखिये···आप जानते होंगे, हर पदार्थ में इलैक्ट्रोन्स गति मान हैं अगर परमात्मा वहाँ नहीं हैं तो ये गति क्यों है ?

ब्रह्माकुमार—परन्तु आप यह भूल गये कि ये गति तो प्रकृति के गुण हैं। गति का अर्थ चेतनता नहीं। आप यह तो ध्यान में रखिये कि प्रकृति में अपने पृथक गुण हैं। ये रूप, रंग, गति, सुगन्ध, चमक प्रकृति के गुण हैं परन्तु ये भासित होते हैं आत्मा को।

चेतनता अर्थात् गति नहीं, बल्कि जहाँ संकल्प, अनुभव व इच्छा हो—वही चेतनता के लक्षण हैं।

इस प्रकार आपको यह स्वीकार करना चाहिए कि परमात्मा सर्वत्र नहीं है उसके सर्वत्र होने के कोई प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं। शास्त्रों में लिखा है—बस। वह तो इसलिए कि शास्त्र-कर्त्ताओं को परमधाम व ब्राह्माण्ड का रहस्य स्पष्ट नहीं हुआ।

आर्य समाजी—न चाहते हुए भी सुनता है और चुप रहता है।

ब्रह्माकुमार—अच्छा, आप यह मानते हैं कि आत्मा मुक्ति से लौटती है, क्या आप यह बतायेंगे कि वह मुक्ति से क्यों लौटती है ?

आर्य समाजी—जब उसकी प्रारब्ध समाप्त हो जाती है, तो उसे वापिस आना पड़ता है।

ब्रह्माकुमार—परन्तु महाशय जी, मुक्ति कोई प्रारब्ध नहीं है। आप यह भी स्वीकार करते हैं कि जब सुकर्म व विकर्म दोनों समाप्त हो जाते हैं, तब आत्मा मुक्त होती है।

आर्य समाजी—हाँ, अगर सुकर्म भी होंगे तो भी उसे जन्म लेना पड़ेगा।

ब्रह्माकुमार—तो जब कोई कर्म ही नहीं रहे तो आत्मा मुक्ति से क्यों लौटी ?

आर्य समाजी—इस बात पर कभी विचार नहीं किया।

ब्रह्माकुमार—आपके सिद्धान्तों के अनुसार इसका उत्तर नहीं दिया जा सकता क्योंकि आपको यह मालूम नहीं कि संस्कार आत्मा में ही समाये हुए हैं। आप एक मुख्य रहस्य से अनभिज्ञ हैं कि आत्मा में उसके सम्पूर्ण जन्मों के हर सेकिंड का पार्ट भरा हुआ है। वह अविनाशी है, उसे बजाने के लिए आत्मा को आना ही पड़ता है।

आर्य समाजी—परन्तु यह बात वेदों में तो नहीं है।

ब्रह्माकुमार—वेदों में तो बहुत-कुछ नहीं है।

आर्य समाजी—नहीं, नहीं, ऐसी बात नहीं। क्या आप एक भी बात बता सकते हैं जिसका ज्ञान वेदों में न हो।

ब्रह्माकुमार—पहले तो वेद-कर्त्ताओं को यह भी मालूम नहीं हुआ कि आत्माओं का मूल लोक कहाँ है। इसलिए अनेक प्रश्नों का उत्तर देने के लिए उन्हें अनेक सिद्धान्त बनाने पड़े। उन्हें आत्मा का भी सम्पूर्ण ज्ञान नहीं हो सका। न परमात्मा का स्पष्ट ज्ञान, न उसके आने के समय का व अवतरण की विधि का ज्ञान, न योग का ज्ञान, न मुक्ति, न स्वर्ग का सम्पूर्ण ज्ञान और न ही इस सृष्टि चक्र का ज्ञान। वास्तव में ये तो भक्ति व कर्म काण्ड के शास्त्र हैं।

आर्य समाजी—(थोड़ा उत्तेजित होता है)—वेदों को चुनौती नहीं दी जा सकती। वेदों को न मानने वाले नास्तिक हैं।

ब्रह्माकुमार—बन्धु, हम तो वेदों को मान रहे हैं परन्तु हम तो केवल यह कह रहे हैं कि उनके अतिरिक्त भी कुछ ज्ञान है।

आर्य समाजी—यह माना नहीं जा सकता।

ब्रह्माकुमार—अच्छा बताइये क्या वेदों के आधार पर आप परमात्मा से अपना सम्बन्ध जोड़ सके ? क्या उसके प्रेम की अनुभूति आपको हुई ?

(महाशय जी उत्तेजना में सभी-कुछ भूल गये)

ब्रह्माकुमार—बोलिये, आत्मा जब मुक्ति से लौटती है तो उसका प्रथम जन्म किस आधार पर होता है ?

आर्य समाजी—प्रभु की इच्छा के आधार पर।

ब्रह्माकुमार—जब उत्तर नहीं तो प्रभु की इच्छा। जैसे पोराणिक लोग प्रभु की लीला कहकर स्वयं को सन्तुष्ट कर लेते हैं, वैसे ही आपका उत्तर 'प्रभु की इच्छा' है। या तो आप ये मानें कि जैसा कर्म वैसा फल या प्रभु की इच्छा ? जन्म लेने में प्रभु

की इच्छा नहीं चलती।

आर्य समाजी—शान्त चित्त होकर देखता है।··· ये हैं कौन जो आर्य विद्वानों से बेधड़क बात कर रहे हैं!

ब्रह्माकुमार—अच्छा, महाशय जी···आप एक बात और बताइये कि क्या युगों की आयु का वर्णन वेदों में है।

आर्य समाजी—विचार में पड़ जाता है—सचमुच युगों की आयु का वर्णन वेदों में तो नहीं।

ब्रह्माकुमार—युगों की आयु का वर्णन तो पुराणों में, मनुस्मृति में है, वेदों में नहीं है।

आर्य समाजी—हाँ, जो ग्रन्थ वेदानुकूल हैं, वे भी हमें मान्य हैं।

ब्रह्माकुमार—परन्तु पुराणों को तो आप वेद-विरुद्ध मानते हो, फिर आपने पुराणों के आधार पर युगों की आयु लाखों वर्ष सत्य कैसे मान ली?

आर्य समाजी—गम्भीर मुद्रा में···

ब्रह्माकुमार—दूसरी मुख्य बात यह है कि जिन ग्रन्थों में युगों की आयु का वर्णन है, उनमें किसी भी मूल सूत्रों में युगों की आयु लाखों वर्ष नहीं कही है। जैसे कलियुग की आयु १२०० वर्ष और सन्धि काल ५० वर्ष। परन्तु भाष्यकारों ने कुछ प्रश्नों की सन्तुष्टि के लिए इसे दिव्य वर्ष कहकर ३६० से गुणा कर दिया···जो अयथार्थ है और आप जैसे विद्वानों ने उसे स्वीकार कर लिया। यह किसने बताया कि एक देव वर्ष ३६० मानवी वर्षों के बराबर है। क्या ये सभी कल्पनाएँ नहीं हैं।

लगभग दो घण्टे तक बार-बार अपने को निरुत्तर महसूस करने के बाद महाशय जी की वही स्थिति हुई जो प्रायः हुआ करती है। महाशय जी को जीवन में शायद प्रथम बार ही तो आत्मिक ज्ञान की कमज़ोरियों का भान हो रहा था और वह भी एक युवक के द्वारा।

यह देख महाशय जी उत्तेजित हो उठे!

बोले—पहले आप ये तो बताइये···कि आप हैं कौन? आपका परिचय क्या है? परिचय लेना तो मैं भूल ही गया।

हमने कहा—हाँ यही तो हमें भी बताना था। हम प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय से आये हैं।

यह सुनकर महाशय जी हतप्रभ हो गये···होंठ तो उनके पहले ही सूख चुके थे···

शायद यह सोचकर कि ब्रह्माकुमार इतना गहरा ज्ञान कहाँ से सीखे—इनके पास इतना गुह्य ज्ञान कहाँ से आया···हम तो सोचते थे कि इनके पास तो गुड़ियों का खेल है।

हमने पूछा—क्या आप हमारे सिद्धान्तों को अच्छी तरह जानते हैं।

महाशय जी धीमे बोले—हाँ···

तो क्या आप हमारे यहाँ आ सकते हैं?

हाँ आने-जाने में क्या हर्जा? आप बुलाते हैं तो हम अवश्य आयेंगे। अन्त में हमने कहा—

महाशय जी, ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय में दिया गया ज्ञान सम्पूर्ण व अति सूक्ष्म है। परन्तु आज के विद्वान उसे जानने का प्रयास नहीं करते। हम आपसे अपेक्षा करते है कि आप उनकी सत्यता को समीप आकर देखेंगे।

□

(पृष्ठ १३ का शेष)

उसको देव बनाना।
यही ज्ञान प्रभु दे रहे;
वही है तुम्हें सुनाना॥
संशय की बेला गई,
मिटा सभी अज्ञान।
पतितों को पावन करने,
आये शिव भगवान॥
हर्षित पण्डित जी हुए,
ज्ञानामृत लीन्हा।
सारे ईश्वरीय चित्रों को
बढ़े ध्यान से चीन्हा॥
बिना बुलाये ही आऊँगा,
संशय-भ्रम सब दूर भये।
ज्ञान योग करने का प्रण कर,
मुदित हृदय निज गेह गये॥

—क्रमशः (शेष आगामी अंक में पढ़िये)

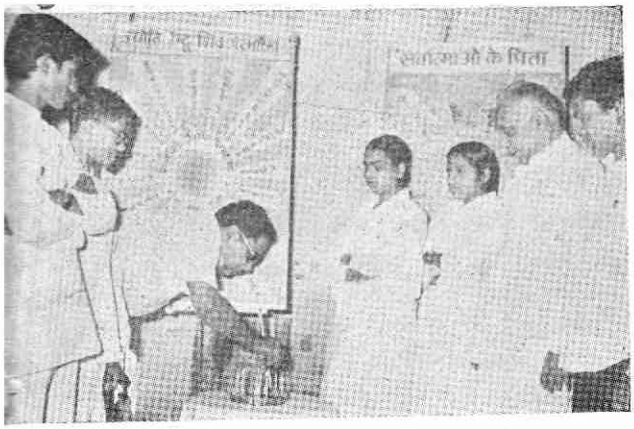

यह चित्र बनगुदेला (रत्नागिरी) में आयोजित आध्यात्मिक कार्यक्रम के अवसर का है। नगरपालिका के अध्यक्ष भ्राता जी० वी० गडेकर प्रदर्शनी का उद्घाटन कर रहे हैं। कोनकन मिनरलस के मालिक तथा अन्य बहन भाई साथ खड़े हैं।

यह चित्र कृष्णानगर सेवाकेन्द्र द्वारा गीता-कालोनी में आयोजित शिव-जयन्ती समारोह के अवसर का है। लोकसभा सदस्य भ्राता एच० के० एल० भगत प्रवचन कर रहे हैं। तथा मंच पर ब्र० कु० बृजमोहन, ब्र० कु० प्रेम तथा आस्ट्रेलिया की बहन ऐलन बैठी हैं।

ऊपर के चित्र में बहादुरगढ़ में आयोजित प्रदर्शनी का उद्घाटन वहाँ के एस० डी० एम० भ्राता महावीर गुप्ता कर रहे हैं।

यह चित्र नासिक में आयोजित शिव-जयन्ती समारोह के अवसरका है। वहाँ के प्रसिद्ध उद्योगपति मुंदडा जी शिव-शंकर में अन्तर की झाँकी को देखकर हर्षित हो रहे हैं।

यह चित्र मेरठ में आयोजित 'गीता रहस्य आध्यात्मिक प्रदर्शनी' का है। सिटी मजिस्ट्रेट भ्राता सुभाषकुमार टेप काटकर प्रदर्शनी का उद्घाटन कर रहे हैं।

चित्र में पहाड़गंज (देहली) सेवा केन्द्र की ओर से आयोजित शिव दर्शन आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन महाबोधी सोसाईटी आफ़ इन्डिया के सचिव भ्राता आर्यवन्श नायक महाथेरा कर रहे हैं। साथ में अन्य भाई बहन खड़े हैं।

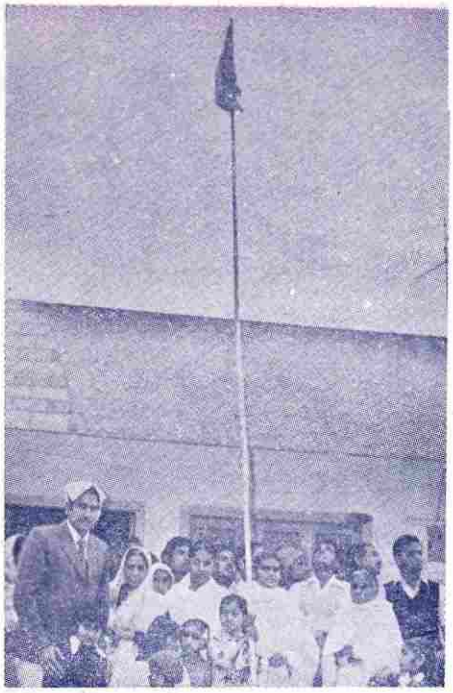

—शिव जयन्ती के उपलक्ष में आयोजित समारोह में फतेहाबाद के एस० डी० एम० शिव ध्वजारोहण कर रहे हैं। साथ में ब्र० कु० प्रेम तथा अन्य बहन-भाई खड़े हैं।

ऊपर का चित्र कृष्णानगर में आयोजित शिव जयन्ती समारोह के अवसर का है। ब्र० कु० पुष्पा जी लोक सभा सदस्य भ्राता एच० के० एल० भगत को ईश्वरीय साहित्य भेंट कर रही हैं।

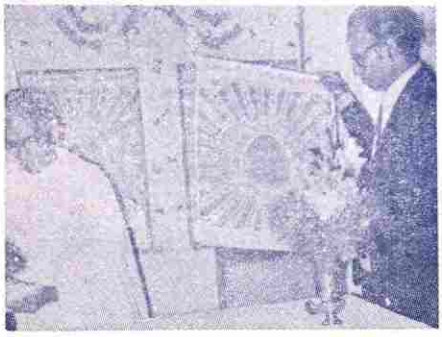

यह चित्र राँची में आयोजित शिव-जयन्ती समारोह के अवसर का है। आकाशवाणी के निर्देशक भ्राता जी० सी० विश्वास को ब्र० कु० रानी परमात्मा शिव का चित्र भेंट कर रही हैं।

यह चित्र कानपुर में मनाया गया 'स्मृति दिवस समारोह' के अवसर का है। वहाँ के पुलिस सुपरिन्टैन्डैण्ट भ्राता बलबीरसिंह प्रवचन कर रहे हैं। मंच पर ब्र० कु० सन्तराम, ब्र० कु० गंगेजी एवं विद्या बैठी हैं।

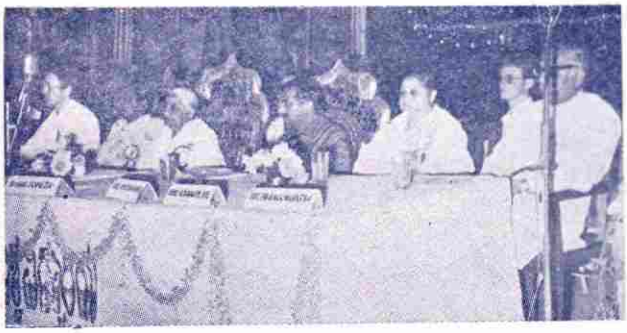

यह चित्र मैसूर के टाउन हाल में आयोजित 'विश्व सम्मेलन' के अवसर का है। ब्र० कु० चार्ले प्रवचन कर रहे हैं तथा मंच पर भ्राता पाराशिव मूर्ति भ्राता सामेशे (नगरपालिका के कमिश्नर), ब्र० कु० प्रकाशमणी जी (मुख्य प्रशासिका) मोहिनी बहन तथा ब्र० कु० जगदीश चन्द्र जी बैठे हैं।

इस चित्र में फ़रीदकोट में बनाये गये आध्यात्मिक संग्रहालय का उद्घाटन भ्राता कृपालसिंहजी कर रहे हैं। साथ में ब्र० कु० चन्द्रमणि व अन्य बहन भाई खड़े हैं।

सभी सुखों की प्राप्ति का एक उपाय

लेखिका :—ब्रह्माकुमारी शीला, काठमांडू (नेपाल)

"सभी विद्यायें सुख की प्राप्ति के लिए ही अध्ययन की जाती हैं। सभी प्रयत्न और पुरुषार्थ भी सुख ही की प्राप्ति के लिए किये जाते हैं परन्तु सभी लौकिक विद्याओं तथा सभी प्रकार के लौकिक पुरुषार्थ से अल्प-काल का सुख प्राप्त होता है। सभी मनोकामनायें सदा के लिए पूरी नहीं होती और सब प्रकार के दुःखों से सदा के लिए निवृत्ति प्राप्त नहीं होती क्योंकि वह दुःखों को जड़ से नहीं काटते और सुख के वृक्ष की जड़ को पानी नहीं देते बल्कि पत्ते-पत्ते को पानी देते हैं।

मैं अपने निजी अनुभव के आधार से कह सकती हूँ कि ईश्वरीय ज्ञान ही ऐसी विद्या है और सहज ईश्वरीय योग ही ऐसा पुरुषार्थ है जिससे मनुष्य को यह प्राप्ति होती है। परन्तु अफ़सोस इस बात का है कि मनुष्य अपने आप को ही नहीं जानता कि मैं कौन हूँ ? अपने असली स्वरूप को भूल कर स्वयं को देह माने हुए है। मनुष्य का जैसा निश्चय होता है वैसा उसका व्यय होता है। मानव ही भगवान की सृष्टि का शिंगार है और आध्यात्मिकता मानव का शिंगार है क्योंकि भगवान ने ही मानव को अमर वरदान दे कर अमर बनाया है। मानव ही बुद्धिजीवी तथा विकास शीला है। मगर अपने आप को ५ तत्त्व का पुतल देह समझता है, जब कि यह देह विनाशी और आत्मा अरज-अमर और अविनाशी है—यह जानना ही मनुष्य का सब से बड़ा धर्म है। जिस की धारणा जीवन में होनी अति आवश्यक है। मनुष्य स्वयं अपने लिए भी तथा दूसरों के लिए भी एक समस्या बन कर रह गया है जिस को सुलझाना बहुत कठिन हो गया है। जिन्दगी की भीड़ में दौड़ता हुआ मानव अपने अन्तिम लक्ष्य के वास्तविक ज्ञान से दूर है। जिस मार्ग का ज्ञान ही नहीं उस मार्ग पर चलने से क्या लाभ। इसलिए इन सभी बातों का ज्ञान स्वयं भगवान को ही आकर देना पड़ता है। जब यह स्वयं सृष्टि पर आते है तो अपनी पहचान के साथ-साथ हम आत्माओं को भी पहचान देते हैं। आज वैज्ञानिक विकास द्वारा भौतिक उन्नति तो बहुत हुई है, मगर मानसिक तनाव बढ़ गया है। जिस कारण मनुष्यों को गोलीयाँ खाकर नींद करनी पड़ती है। मनुष्यों ने विज्ञान द्वारा प्राकृतिक शक्ति को अपने वश में किया है लेकिन एक दूसरे के प्रति मन में स्नेह और सद्भावना नहीं है। ईश्वरीय ज्ञान के बिना मानव दानव के समान बन गया है और उसे देवता बनने के लिए आध्यात्मिक ज्ञान और सहज राजयोग की आवश्यकता है। आज के युग में सभी मनुष्यों के जीवन में पवित्रता, दिव्यगुण आदि का होना बहुत ही ज़रूरी है। नर ऐसी करनी करे जो नारायण बन जाए, नारी ऐसी करनी करे जो लक्ष्मी बन जाए।

परमात्मा के द्वारा सिखाया गया वास्तविक ज्ञान और योग ही सरल तथा मधुर है जिस के द्वारा विकारों पर विजय प्राप्त हो सकती है। मनुष्य का कल्याण तो जानने से ही हो सकता है। परन्तु कई बार मनुष्य सत्यता को छोड़कर कल्पना की उड़ान उड़ने लगता है क्योंकि उसे कल्पना में अधिक सुख मालुम होता है, लेकिन इस के द्वारा अल्प काल का क्षणिक सुख मिलता है। अब मानव को सम्पूर्ण और सदा काल का सुख चाहिए। जिस में तन, मन, धन और जन, चारों प्रकार का सुख हो। यदि आज कोई अपने को सुखी समझता है तो कल उसे तन का रोग, व्यापार में हानि, सम्बन्धियों की ओर से अशान्ति,

दुर्घटना के द्वारा कष्ट, प्राकृतिक आपदा के कारण पीड़ा अथवा बुढ़ापे का दुःख आ घेरता है। इस पुरानी कलियुगी दुनियाँ में सुख का सार नहीं है। सच्चे सुख की अवस्था वह अवस्था है जिसमें दुःख का पता भी न हो। उसे यह भी मालूम न हो कि रोग, शोक, लड़ाई, झगड़ा, आपदा और अशान्ति क्या होते हैं? यह सब मिटाने का और जीवन में सुख शान्ति की प्राप्ति करने का केवल एक मात्र उपाय है—ईश्वरीय ज्ञान और सहज राजयोग की शिक्षा। जिससे हम सदा सुखी बन सकते हैं।

एक का महत्त्व

ले०—ब्रह्माकुमार आनन्द

एक एक सांस से मिल कर जीवन का यह गीत बना है
एक एक वीणा की धड़कन से सारा यह संगीत बना है
एक एक मोती से मिल कर माला का यह रूप बना है
एक एक पौधे से मिल कर ही जंगल का सरूप बना है
एक एक कण के मिलने से भूमंडल यह बना हुआ है
एक एक अंग के मिलने से देह हमारा तना हुआ है
एक एक कलि से मिलकर सुन्दर हार सजा हुआ है
एक एक तारे से मिलकर नीलगगन यह भरा हुआ है
एक एक कदम बढ़े तो कोसों मील कट जाते हैं
एक एक ईंट चुनने से महल चौबारे बन जाते हैं
एक एक ही शब्द लिखे तो ग्रंथ सैंकड़ों भर जाते हैं
एक एक माटी के कण से नदियों के मुंह बन्ध जाते हैं
एक एक धागे से मिलकर वस्त्रों का भंडार बना है
एक एक ताना बुनकर मकड़ी का यह जाल बना है
एक एक बिन्दु से मिलकर रेखा का स्वरूप बना है
एक एक चोट से ही तो पत्थर मूर्ति रूप बना है।
एक एक फूल से मिलकर सुन्दर यह गुलज़ार बना है
एक एक पल मिलकर ही कल्प कल्प का काल बना है
एक एक बूंद वर्षा ही तो नदिया पानी से भर ले आती है
एक एक चप्पू से ही किश्ती पार किनारे लग जाती है।
एक एक जब जाग उठे तो जाग उठे संसार
एक एक जब उठ बैठे तो उठ जायें पहाड़
एक एक के थमने से, थम जाते नदिया के प्रवाह
एक एक के चलने से बन जाते टीलों में भी राह
एक एक आंगुलि से मिल गोवर्द्धन पर्वत उठ जाता है
एक एक के दिव्य बनने से स्वर्ग सृष्टि बन जाता है

आध्यात्मिक सेवा समाचार

ले०—ब्रह्माकुमार सुन्दरलाल, दिल्ली

पिछले मास विभिन्न सेवा-केन्द्रों द्वारा की गई ईश्वरीय सेवा के बहुत ही उत्साहवर्धक एवं प्रेरणादायक समाचार मिले हैं जिनका सारांश यहाँ उद्धृत है।

सिकन्दराबाद में विभिन्न आध्यात्मिक कार्यक्रम—सिकन्दराबाद सेवा-केन्द्र की ओर से 'स्मृति दिवस' के उपलक्ष में शहर के विभिन्न भागों से एक विशाल 'शोभा यात्रा' निकाली गई तथा ईश्वरीय सन्देश के पर्चे बाँटे गये। इस अवसर पर त्रिदिवसीय सार्वजनिक प्रवचनों का कार्यक्रम भी हुआ जिसमें विधान सभा के अध्यक्ष भ्राता डी० पी० कोन्डैय्या चौधरी मुख्य अतिथि के रूप में पधारे थे तथा एम० एल० ए० भ्राता महेन्द्र जी भी पधारे थे। काफी संख्या में सभी वर्ग के प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया। इसके अतिरिक्त महिलाओं और धार्मिक नेताओं के लिए अलग-अलग प्रोग्राम रखे गये जिसमें काफ़ी लोगों ने भाग लिया। इसका समाचार वहाँ के हिन्दी अंग्रेजी एवं तेलगू भाषाओं में प्रकाशित होने वाले समाचार पत्रों में प्रकाशित हुआ। इस अवसर पर आयोजित राजयोग शिविर से भी अनेक लोगों ने लाभ उठाया। इसके अतिरिक्त 'टूरिज्म समारोह' में एक स्टाल में आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गई जिसे अनेक मन्त्रियों एवं धार्मिक नेताओं ने देखा जिसमें वहाँ के राज्यपाल, मुख्यमंत्री तथा काश्मीर के मुख्यमन्त्री आदि का नाम उल्लेखनीय है।

जोधपुर में 'अन्तर्राष्ट्रीय राजयोग दिवस' का प्रथम वार्षिकोत्सव—जोधपुर सेवा-केन्द्र की ओर से 'अन्तर्राष्ट्रीय राजयोग दिवस' का प्रथम वार्षिकोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया जिसमें काफी लोगों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम से वहाँ के प्रमुख अस्पताल के डाक्टर्स, विश्व-विद्यालय के लेक्चरार तथा रेलवे आफिसरस ने विशेष लाभ उठाया। 'राजस्थान पत्रिका' में भी इस कार्यक्रम का समाचार प्रकाशित हुआ।

राँची में 'स्मृति दिवस समारोह—राँची सेवा-केन्द्र की ओर से आध्यात्मिक प्रवचनों, अलौकिक अनुभवों व गीतों का कार्यक्रम हुआ जिसमें योगदा कॉलेज के प्रिंसिपल शिवशंकर दूबे मुख्य अतिथि के रूप में पधारे थे। सभी वर्ग के अनेक प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने इसमें भाग लिया। वहाँ के 'वीकली न्यूज-पेपर' तथा "सैन्टीनल" में 'पिताश्री' जी की संक्षिप्त जीवन कहानी भी प्रकाशित हुई।

मिरजापुर में अव्यक्त स्मृति दिवस समारोह—मिरजापुर सेवा-केन्द्र द्वारा 'स्मृति दिवस' के उपलक्ष में आध्यात्मिक प्रवचनों, अनुभव व गीतों का कार्यक्रम हुआ जिसकी अध्यक्षता 'राज्य परिवहन क्षेत्रीय प्रबन्धक भ्राता अवधबिहारी लाल ने की। सभी वर्ग के अनेक लोगों ने इस कार्यक्रम से लाभ उठाया।

अयोध्या तथा फैजाबाद में ईश्वरीय ज्ञान की धूम—फैजाबाद तथा रेवना में स्थित उप-सेवा-केन्द्रों की ओर से अयोध्या तथा दर्शन नगर में त्रिदिवसीय प्रदर्शनी तथा प्रवचनों का कार्यक्रम हुआ तथा मुख्य स्थानों से प्रभात फेरी निकाली गई। हजारों लोगों ने परमात्मा शिव का वास्तविक परिचय प्राप्त किया।

जयपुर में विभिन्न आध्यात्मिक कार्यक्रम—जयपुर में स्थित सेवा-केन्द्रों की ओर से "गणतन्त्र दिवस' के उपलक्ष में राजस्थान सरकार द्वारा लगाये गये मेले में कुछ स्टाल लेकर आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिससे अनेकानेक आत्माओं ने लाभ उठाया। इसके अतिरिक्त वहां के लायन्स क्लब तथा राजस्थान विश्व-विद्यालय के 'टीचरस निवास हाल' में आध्यात्मिक प्रवचनों व गीतों का कार्यक्रम बड़ा ही सफल रहा।

बरेली में आध्यात्मिक प्रदर्शनी एवं प्रवचन—बरेली सेवा-केन्द्र की ओर से वहाँ के प्रसिद्ध मन्दिर में त्रिदिवसीय 'आध्यात्मिक प्रदर्शनी' का आयोजन किया गया जिससे अनेकानेक आत्माओं ने लाभ

उठाया। इसके अतिरिक्त वहाँ की बहेडी तहसील में आयोजित प्रदर्शनी का कार्यक्रम भी बड़ा ही सफल रहा।

बटाला में आकर्षक झाकियों एवं प्रवचनों का कार्यक्रम—बटाला सेवा-केन्द्र की ओर से वहाँ के मेन बाजार में शिक्षाप्रद झाकियों तथा राजयोग प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिससे अनेकानेक आत्माओं ने लाभ उठाया।

नागपुर में पिताश्री स्मृति दिवस समारोह—नागपुर सेवा-केन्द्र की ओर से वहाँ के 'मोर भवन' में 'स्मृति दिवस' के उपलक्ष में आध्यात्मिक प्रवचनों गीतों एवं 'राजयोग अभ्यास' का कार्यक्रम रखा जिसका उद्घाटन वहाँ के उपमहापौर भ्राता वल्लभदास जी डागा ने किया। इस अवसर पर राजयोग फिल्म तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन भी बड़ा ही सफल रहा। स्थानीय समाचार पत्रों ने पिताश्री की जीवन कहानी तथा कार्यक्रम का संक्षिप्त समाचार प्रकाशित किया।

उदयपुर में स्मृति दिवस समारोह—उदयपुर सेवा-केन्द्र की ओर से 'स्मृति दिवस' के उपलक्ष में आयोजित सार्वजनिक प्रवचनों एवं गीतों का कार्यक्रम बड़ा ही सफल रहा।

बेलगांव के निकटवर्ती ग्रामों में ज्ञान की गजगोर बेलगांव सेवा-केन्द्र की ओर से निकटवर्ती ग्रामों में आध्यात्मिक प्रवचनों एवं राजयोग शिविर का कार्यक्रम हुआ जिससे हजारों ग्रामवासियों ने लाभ उठाया। अनेक स्कूलों के विद्यार्थियों एवं शिक्षकों ने राजयोग शिविर में भाग लिया और इसे 'चरित्र निर्माण' का सहज साधन बताया।

वाराणसी में पिताश्री स्मृति दिवस समारोह—वाराणसी सेवा-केन्द्र की ओर से वहाँ के टाउनहाल में सार्वजनिक प्रवचनों, गीतों एवं अनुभव के रूप में 'स्मृति दिवस समारोह' मनाया गया जिसमें पातंजलि योग संस्थान के निर्देशक भ्राता 'दत्ताराव' जी मुख्य अतिथि के रूप में पधारे थे। सभी वर्ग के अनेक लोगों ने इस कार्यक्रम से लाभ उठाया। इसके अतिरिक्त 'योग संस्थान' के निमन्त्रण पर वहाँ के 'गंगा महल' में ब्रह्माकुमारी बहनों के प्रवचन हुए जिससे अनेकानेक लोगों ने लाभ उठाया।

कटक में स्मृति दिवस समारोह—कटक सेवा-केन्द्र की ओर से वहाँ के टाऊन हाल में पिताश्री स्मृति दिवस के उपलक्ष में सार्वजनिक प्रवचनों एवं गीतों का कार्यक्रम हुआ जिसमें उड़ीसा हाईकोर्ट के जज भ्राता कुन्जबिहारी पण्डा मुख्य अतिथी के रूप में पधारे थे। इस सारे कार्यक्रम का विस्तृत समाचार तथा पिताश्री की जीवन कहानी वहाँ के प्रमुख समाचार पत्रों में प्रकाशित हुई जिनमें से 'समाज', 'प्रजातन्त्र', मातृभूमि तथा धरित्री का नाम उल्लेखनीय है। इसके अतिरिक्त 'महिला सम्मेलन' तथा अन्तर्राष्ट्रीय राजयोग दिवस' का कार्यक्रम भी बड़ा सफल रहा।

लखनऊ के निकटवर्ती ग्रामों में आध्यात्मिक प्रदर्शनी—लखनऊ (हजरतगंज) सेवा-केन्द्र की ओर से पूठा में त्रिदिवसीय आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिससे अनेकानेक आत्माओं ने लाभ उठाया। इसके अतिरिक्त ग्रामवासियों को ईश्वरीय सन्देश देने हेतु विभिन्न कार्यक्रम किये गये। जिनमें से महमूदाबाद, बदरउद्दीन, पिरेड आदि ग्रामों का नाम उल्लेखनीय है।

अम्बाला में स्मृति समारोह—अम्बाला सेवा-केन्द्र की ओर से वहाँ के 'सनातन धर्म स्कूल' के हाल में 'स्मृति दिवस' के उपलक्ष में सार्वजनिक प्रवचनों, गीतों एवं राजयोग का कार्यक्रम हुआ। स्कूल के प्रिंसिपल तथा शहर के प्रमुख व्यक्तियों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया। प्रमुख समाचार पत्रों 'पिताश्री' की जीवन कहानी भी छपाई गई। इसी प्रकार फतेहबाद, ककोड़, पटियाला, करनाल, भण्डार, सतारा, बडीपदा, आदिपुर (कच्छ), अलवर, मुजफ्फर नगर, चित्रदुर्ग, फरीदाबाद, इलाकल, कासगंज, ब्रह्मपुर, कोल्हापुर, मेनपुरी, वारंगल, चन्द्रपुर आदि स्थानों पर भी 'स्मृति दिवस समारोह' आध्यात्मिक प्रवचनों एवं गीतों के रूप में मनाया गया।

जालन्धर में दिव्य झांकियों तथा प्रवचनों का कार्यक्रम—जालन्धर सेवा-केन्द्र की ओर से प्रसिद्ध बाबा दयाल (ध्यानपुर वाले) के जन्म दिवस के उपलक्ष में आयोजित शोभा यात्रा में 'स्वर्ग' एवं 'सर्व आत्माओं के पिता' की शिक्षाप्रद झाकियां सजाई गई थीं तथा शहर के प्रमुख भागों से निकाली गई। इनके द्वारा हजारों लोगों को ईश्वरीय सन्देश दिया

गया। इसके अतिरिक्त पिताश्री स्मृति दिवस के उपलक्ष में सार्वजनिक प्रवचनों का कार्यक्रम बड़ा ही सफल रहा तथा वहाँ के 'पंजाब केसरी', 'अकाली पत्रिका' तथा 'हिन्द समाचार' आदि समाचार पत्रों में पिताश्री की जीवन कहानी प्रकाशित हुई।

पटना में पिताश्री स्मृति दिवस समारोह—पटना सेवा-केन्द्र की ओर से 'स्मृति दिवस' के उपलक्ष में आध्यात्मिक प्रवचनों एवं गीतों का कार्यक्रम हुआ जिसमें शहर के अनेक प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने भाग लिया जिनमें से बिहार विधान सभा के अध्यक्ष भ्राता त्रिपुरारी प्रसाद सिंह, भूतपूर्व शिक्षामंत्री आदि का नाम उल्लेखनीय है। इसके अतिरिक्त दतियाना तथा विक्रम में भी राजयोग शिविर का कार्यक्रम बड़ा ही सफल रहा।

कलकत्ता में विभिन्न आध्यात्मिक कार्यक्रम—कलकत्ता सेवा-केन्द्रों की ओर से 'पिताश्री' स्मृति दिवस के उपलक्ष में त्रिदिवसीय आध्यात्मिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें गीता प्रचार मण्डली के स्वामी देवानन्द, सरस्वती, कलकत्ता विश्वविद्यालय के उपकुलपति डॉ० आर० के० पोद्दार तथा हाईकोर्ट की जज बहन प्रतिभा बैनर्जी आदि भी पधारे थे। इस कार्यक्रम से अनेकानेक आत्माओं ने लाभ उठाया। इसके अतिरिक्त संक्रान्ति के अवसर पर वहाँ के नकुलेश्वर मन्दिर तथा सरस्वती पूजा के अवसर पर प्रमुख स्थानों पर आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसे हजारों लोगों ने देखा तथा श्रेष्ठाचारी जीवन बनाने की प्रेरणा ली।

अमेरीका (टैक्सास) में आध्यात्मिक कार्यक्रम—टैक्सास में स्थित सेवा-केन्द्र की ओर से विभिन्न आध्यात्मिक कार्यक्रमों द्वारा वहाँ की जनता को ईश्वरीय सन्देश दिया गया। विभिन्न स्थानों पर राजयोग शिविर, प्रवचनों एवं प्रोजैक्टर शो का आयोजन किया गया। वहाँ दो लायब्रेरी में प्रवचन हुए। अमेरिकन "एसोशियेशन आफ यूनिवर्सीटी वूमन" में प्रवचनों का कार्यक्रम हुआ जिससे अनेक महिलाओं ने लाभ उठाया। नया वर्ष के उपलक्ष में आयोजित कार्यक्रम से भी अनेक आत्माओं ने लाभा उठाया।

ग्याना (साऊथ अमेरीका) में ईश्वरीय सन्देश—ग्याना में स्थित सेवा-केन्द्र की ओर से समाचार मिला है कि वहाँ के शिक्षामंत्री भ्राता विनसैन्ट टीकाह के शरीर छोड़ने पर दिवगन्त आत्मा को वहाँ के बहन भाईयों ने विशेष 'योग का दान' दिया। उनके परिवार को भी परमात्मा का परिचय दिया गया तथा आत्मा के आवागमन की शिक्षा द्वारा उनको शान्ति का अनुभव हुआ। इसके अतिरिक्त वहाँ के कूरू-कूरू कालेज के कृषि अधिकारियों को ब्रह्माकुमारी मीरा ने परमात्मा का परिचय सुनाया। बिशप हाई स्कूल तथा हिन्दू सोसायटी में भी ब्रह्माकुमारी बहनों के प्रवचन हुए। स्थानीय रेडियो द्वारा भी जन-जन को ईश्वरीय सन्देश देने का कार्यक्रम चलता रहता है। लण्डन से सुदेश बहन के पधारने पर वहाँ के हास्पीटल में उनका प्रवचन हुआ जिससे अनेक डॉक्टरों एवं मरीजों ने लाभ उठाया। वहाँ के प्रधानमंत्री से मिलकर ईश्वरीय सन्देश एवं माऊँट आबू में पधारने का निमन्त्रण दिया गया। इसी प्रकार नये वर्ष पर भी अनेक आत्माओं को ईश्वरीय सन्देश दिया गया। वहाँ के अनेक समाचार पत्रों द्वारा भी ईश्वरीय सन्देश घर-घर पहुँचाने में बहुत सहयोग मिल रहा है।

नरौबी (केन्या) में विभिन्न आध्यात्मिक कार्यक्रम—नरौबी (केन्या) में स्थित सेवा-केन्द्र द्वारा की गई ईश्वरीय सेवा का बहुत ही उत्साह-वर्धक समाचार मिला है। भारत में मनाये जाने वाले सभी त्यौहारों को आध्यात्मिक रीति से मनाया गया तथा वहाँ की जनता को इनकी विशेषता समझायी गई। नवरात्रि, दीपावली, भैयादूज आदि त्यौहारों का विशेष महत्त्व समझाया गया जिससे वहाँ की जनता बहुत प्रभावित हुई।

झरिया में पिताश्री स्मृति दिवस समारोह—झरिया सेवा-केन्द्र की ओर से स्मृति दिवस के उपलक्ष में वहाँ के एक प्रमुख हाल में सार्वजनिक प्रवचनों एवं 'बाल प्रदर्शनी' का आयोजन किया गया जिसमें वहाँ के पुलिस अधीक्षक भ्राता आर० आर० प्रसाद मुख्य अतिथी के रूप में पधारे थे। इस कार्यक्रम में अनेकानेक लोगों ने भाग लिया। इसके अतिरिक्त धनबाद में आयोजित ओद्यौगिक प्रदर्शनी में दो स्टाल लेकर एक मास के लिये चरित्र निर्माण प्रदर्शनी लगाई गई जिसे हजारों लोगों ने देखा और लाभ उठाया। बोकारों सीटी पार्क में आयोजित प्रदर्शनी भी बड़ी सफल रही।

दिल्ली (चांदनी चौक संग्रहालय) द्वारा ईश्वरीय सेवा—दिल्ली (चांदनी चौक) में स्थित सेवा-केन्द्र के भाई-बहनों ने मिलकर विशिष्ठ व्यक्तियों को ईश्वरीय सन्देश देने का कार्यक्रम बनाया, इसी के अनुसार केन्द्रीय न्यायमंत्री भ्राता शिवशंकर जी, सूचना एवं प्रसारणमंत्री भ्राता वी० पी० साठे जी, विदेश मंत्री भ्राता पी० वी० नरसिंहराव जी तथा शिक्षामंत्री भ्राता बी० शंकरानन्द जी को सम्मुख मिलकर ईश्वरीय साहित्य एवं सन्देश दिया गया तथा उन्हें मुख्यालय माऊँट आबू में पधारने का भी निमन्त्रण दिया गया जिसे उन्होंने सहर्ष स्वीकार किया।

इसके अतिरिक्त शिव-जयन्ती समारोह भी बड़ी धूमधाम से मनाया गया तथा शिव-ध्वजारोहण का कार्यक्रम भी विभिन्न स्थानों पर हुआ।

शक्ति नगर व कमला नगर सेवा-केन्द्रों द्वारा शिव-जयन्ती समारोह—दिल्ली (शक्ति नगर) में स्थित सेवा-केन्द्र द्वारा विभिन्न स्थानों पर शिव-जयन्ती के उपलक्ष में दिव्य झाँकियों, आध्यात्मिक प्रवचनों एवं गीतों का कार्यक्रम हुआ जिसके द्वारा अनेकानेक आत्माओं को परमात्मा शिव का वास्तविक परिचय दिया गया तथा शिव रात्रि का आध्यात्मिक महत्त्व तथा मनाने का वास्तविक तरीका बताया गया। इस अवसर पर प्रमुख स्थानों से प्रभात फेरी भी निकाली गई तथा शिव परमात्मा के सन्देश जन-जन तक पहुंचाया गया। इनमें से शक्ति नगर सोहनगंज, विजय नगर, पंजाबी बस्ती तथा आदर्श नगर का नाम उल्लेखनीय है। सभी स्थानों पर शिव ध्वजारोहण किया गया तथा इलाके के नगर निगम के सदस्यों एवं विशिष्ठ व्यक्तियों को आमन्त्रित करके ईश्वरीय सदेश दिया गया।

हुबली में विश्व-शान्ति सम्मेलन एवं रजत जयन्ती समारोह—हुबली के ग्लास हाऊस में कर्नाटक की ईश्वरीय सेवा की रजत-जयन्ती के उपलक्ष में विश्व-शान्ति सम्मेलन का आयोजन किया गया जिस का उद्घाटन मुख्य प्रशासिका आदरणीय दादी प्रकाशमणी जी ने किया। इस अवसर पर शहर के प्रमुख भागों से विशाल शोभा यात्रा भी निकाली गई जिसमें देश विदेश के हजारों भाई बहनों से अतिरिक्त सजे हुए हाथी, ऊँट, घोड़े व विद्यार्थियों के बैण्ड बाजे भी थे। हवाई जहाज से शहर के मुख्य भागों में पर्चे व शान्ति यात्रा पर पुष्पों की वर्षा की गई। इसके अतिरिक्त नगर के ट्रैफ़िक आइलैण्ड और सेवा-केन्द्र पर बहुत बड़ा बैलून भी उड़ाया गया। सम्मेलन में प्रातः और सायं दो अधिवेशन होते थे जिसमें जगत-गुरु गंगाधर स्वामी, ज्ञानामृत एवं वर्ल्ड रिन्यूअल के सम्पादक भ्राता जगदीश चन्द्र जी, कर्नाटक विश्वविद्यालय के उप-कुलपति डॉ० ए० एम० अडके, भूतपूर्व केन्द्रीय मंत्री डॉ० सरोजिनी महिषी, डिस्ट्रिक्ट सेशन जज भ्राता बी० डी० हद जी आदि के प्रवचन हुए। साथ ही शिक्षाप्रद नाटक, गीतों एवं कविताओं का सांस्कृतिक कार्यक्रम हुआ जिससे हजारों लोगों ने लाभ उठाया।

बंगलौर में रजत-जयन्ती समारोह एवं विश्व-सम्मेलन—बंगलौर के विधान सभा हाल में आध्यात्मिक प्रदर्शनी एवं विश्व-सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें देश-विदेश के हजारों प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस अवसर पर कालेज एवं स्कूल के विद्यार्थियों का अखिल भारतीय निबन्ध प्रतियोगिता एवं वक्तव्य स्पर्धा का भी आयोजन किया गया तथा विजेता बच्चों को पुरस्कार वितरित किया गया। शहर के मुख्य भागों से विशाल शोभा यात्रा एवं झांकियाँ भी निकाली गईं तथा हवाई जहाज से निमन्त्रण पत्र व पुष्पों की वर्षा की गई। इस सम्मेलन एवं प्रदर्शनी में हजारों लोगों ने भाग लिया तथा विश्वशान्ति पर अनेक अनुभवी वक्ताओं के प्रवचन सुनकर लाभ उठाया। प्रमुख समाचार पत्रों तथा रेडियो ने इस कार्यक्रम को प्रकाशित व प्रसारित करके जन-जन को ईश्वरीय सन्देश देने में सहयोग दिया। सम्मेलन में महिलाओं, बच्चों, आध्यात्मिक व न्यायविदों तथा वैज्ञानिकों एवं डॉक्टरो के अलग-अलग अधिवेशन हुए जो बहुत ही सफल रहे।

फरूखाबाद में शिव-जयन्ती एवं स्मृति दिवस समारोह—फरुखाबाद सेवा केन्द्र की ओर से 'स्मृति दिवस' के उपलक्ष में वहाँ के मानव-मन्दिर में सार्वजनिक प्रवचनों एवं गीतों का कार्यक्रम हुआ जिसमें केन्द्रिय विद्यालय के प्रधानाचार्य मुख्य अतिथि के रूप में पधारे थे। इस कार्यक्रम में सर्व धर्मों के नेताओं व महिलाओं को भी आमन्त्रित किया गया जिसमें अनेकों ने भाग लिया। शिव-जयन्ती समारोह भी शिक्षाप्रद झाँकियों, प्रवचनों व गीतों के रूप में बड़ी

धूमधाम से मनाया गया।

सतना में शिव-दर्शन मेला—सतना के सुभाष-पार्क में शिव-रात्रि के पर्व पर 'शिव-दर्शन मेला' का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन जिला न्याय-धीश भ्राता चौहान ने किया। इस मेले को हजारों लोगों ने देखा और परमात्मा शिव का वास्तविक परिचय प्राप्त किया। इस अवसर पर आयोजित राजयोग शिविर में अनेक आत्माओं ने लाभ उठाया, शहर के विभिन्न भागों से निकाली गई शोभा यात्रा एवं झाकियों का कार्यक्रम भी बहुत सफल रहा।

सिकन्द्राबाद (यू० पी०) में शिव-जयन्ती समारोह—शिव-जयन्ती के उपलक्ष में सिकन्दराबाद सेवा केन्द्र की ओर से आध्यात्मिक प्रवचनों, गीतों व झाँकियों का कार्यक्रम हुआ तथा शहर के मुख्य भागों से प्रभात फेरी निकाली गई।

क्वैम्बटूर में शिवरात्रि समारोह—महाशिव रात्रि के उपलक्ष में क्वैम्बटूर के प्रमुख हाल में आध्यात्मिक प्रवचनों व गीतों का कार्यक्रम हुआ जिसमें वहाँ के कलेक्टर, थ्योसोफिकल सोसाइटी के प्रधान, रेड क्रास सोसाइटी, डिवाईन लाईफ सोसाइटी तथा अन्य संस्थाओं के प्रधान भी पधारे थे। अनेकानेक लोगों ने परमात्मा शिव का वास्तविक परिचय पाया और बहुत प्रभावित हुए।

पोरबन्दर में मानव का भविष्य आध्यात्मिक सम्मेलन—जन-जन को ईश्वरीय सन्देश देने हेतु पोरबन्दर में 'मानव का भविष्य आध्यात्मिक सम्मेलन' का आयोजन किया गया जिसमें अनेकानेक आत्माओं ने भाग लिया। शिक्षाप्रद झाँकियों तथा आध्यात्मिक संग्रहालय के उद्घाटन का कार्यक्रम भी बड़ा ही सफल रहा।

ऊना एवं गुरुदासपुर में शिव-दर्शन प्रदर्शनी—ऊना एवं गुरुदासपुर में स्थित सेवा केन्द्रों की ओर से जन-जन को ईश्वरीय सन्देश देने हेतु 'शिव-दर्शन प्रदर्शनी' का आयोजन किया गया जिससे हजारों लोगों ने परमात्मा शिव का वास्तविक परिचय प्राप्त किया।

चण्डीगढ़ में विभिन्न आध्यात्मिक कार्यक्रम—जन-जन को ईश्वरीय सन्देश देने हेतु चण्डीगढ़ में महाशिवरात्रि का पुनीतपर्व बड़ी धूम-धाम से मनाया गया। इस अवसर पर विभिन्न स्थानों में आध्यात्मिक प्रदर्शनी झाँकियों प्रवचनों गीतों एवं सम्मेलनों का कार्यक्रम रखा गया जिनमें से मुहाली, सैक्टर ३२ में स्थित उप-सेवा केन्द्र, टैगोर थियेटर हाल, ट्रिब्यून कालोनी सैक्टर १८, १९ तथा ३१, कान्वैन्ट स्कूल आदि का नाम उल्लेखनीय है। ये सभी कार्यक्रम बहुत ही सफल रहे और इनसे हजारों लोगों ने लाभ उठाया।

सिरोही में शिव-जयन्ती समारोह—सिरोही में स्थित सेवा केन्द्र की ओर से वहाँ के स्कूल के विशाल हाल में आध्यात्मिक प्रवचनों, झाँकियों एवं गीतों का सांस्कृतिक कार्यक्रम हुआ जिसमें अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायधीश मुख्य अतिथि के रूप में पधारे थे। इसके अतिरिक्त विभिन्न स्थानों पर आध्यात्मिक प्रोजैक्टर शो दिखाया गया जिससे हजारों लोगों ने लाभ उठाया। इसी प्रकार सुमेरपुर, शिवगंज व पिण्डवाड़ा आदि स्थानों पर शिव रात्रि महोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया।

भुवनेश्वर में शिव-जयन्ती समारोह—भुवनेश्वर में स्थित सेवा-केन्द्र की ओर से महाशिव रात्री के उपलक्ष में वहाँ के प्रसिद्ध लिंगराज के मन्दिर के निकट 'शिव दर्शन प्रदर्शनी' का आयोजन किया गया जिसे हजारों शिव-भक्तों ने देखा और परमात्मा शिव का यथार्थ परिचय प्राप्त किया। इस अवसर पर आयोजित सार्वजनिक प्रवचनों एवं गीतों का कार्यक्रम भी बहुत सफल रहा जिसमें रामाकृष्णा मिशन के स्वामी भाख्या नन्द महाराज मुख्य अतिथि थे। इसके अतिरिक्त सेवा केन्द्र का वार्षिकोत्सव भी बड़ी धूम-धाम से मनाया गया।

फतेहपुर में शिव-जयन्ती समारोह—जन-जन को ईश्वरीय सन्देश देने हेतु फतेहपुर के प्रमुख स्थानों पर आध्यात्मिक प्रदर्शनी, प्रवचनों एवं नाटक का सांस्कृतिक कार्यक्रम रखा गया। रेलवे मनोरंजन केन्द्र तथा आई० टी० आई० हाल में आयोजित कार्यक्रम बड़े ही सफल रहे। जिलाधिकारी, अतिरिक्त जिला अधिकारी स्वास्थ्य अधिकारी व अन्य मुख्य व्यक्तियों ने भी इस कार्यक्रम में भाग लिया। इसके अतिरिक्त शहर के प्रमुख भागों से विशाल शोभा यात्रा एवं शिक्षाप्रद झाँकियों का कार्यक्रम भी बहुत सफल रहा।

रांची में शिव-जयन्ती समारोह—रांची सेवा

केन्द्र की ओर से आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसके द्वारा हजारों प्रभू भक्तों को परमात्मा शिव का वास्तविक परिचय दिया गया तथा परमात्मा शिव के अवतरण की शुभ सूचना दी गई। इसके अतिरिक्त प्रवचनों एवं गीतों का विशेष कार्यक्रम हुआ जिसमें आकाशवाणी के डायरेक्टर भ्राता जो० सी० विश्वास मुख्य अतिथि के रूप में पधारे थे तथा आई० टी० आई० कालेज के प्रधानाचार्य ने शिव ध्वजारोहण किया। इसका समाचार स्थानीय समाचार पत्रों में भी प्रकाशित हुआ जिनमें से रांची टाईम्स, 'छोटा नागपुर सन्देश', 'राँची एक्सप्रैस', राँची सम्वाद एवं 'सैन्टीनल' का नाम उल्लेखनीय है।

फतेहाबाद में शिव-जयन्ती समारोह—फतेहाबाद सेवा केन्द्र की ओर से शिव-जयन्ती समारोह बड़ी धूमधाम से मनाया गया जिसमें वहाँ के एस० डी० एम० मुख्य अतिथि के रूप में पधारे थे। उन्होंने इस अवसर पर शिव ध्वजारोहण भी किया। अनेक प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने भी इस कार्यक्रम से लाभ उठाया।

नासिक में विभिन्न आध्यात्मिक कार्यक्रम—नासिक में स्थित सेवा केन्द्र की ओर से शिव-जयन्ती के उपलक्ष में शिक्षाप्रद झांकियाँ,आध्यात्मिक प्रदर्शनी एवं प्रवचनों का कायक्रम हुआ जिससे हजारों लोगों ने लाभ उठाया।

सागर में चरित्र-निर्माण प्रदर्शनी एवं सम्मेलन—महाशिव रात्रि के पर्व पर सागर सेवा केन्द्र की ओर से वहाँ के प्रमुख स्थान पर चरित्र-निर्माण प्रदर्शनी एवं सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसे अनेकानेक लोगों ने देखा और लाभ उठाया। इस अवसर पर आयोजित राजयोग शिविर से भी अनेक आत्माओं ने लाभ उठाया। स्थानीय समाचार पत्रों ने भी इस कार्यक्रम का विवरण प्रकाशित किया।

मिर्जापुर में शिव-जयन्ती समारोह—मिर्जापुर सेवा केन्द्र की ओर से वहाँ की रेलवे इन्स्टीच्यूट तथा जमोई ग्राम में 'शिव दर्शन प्रदर्शनी' का आयोजन किया गया जिसके द्वारा अनेकानेक आत्माओं को परमात्मा शिव का वास्तविक परिचय दिया गया। इसके अतिरिक्त कई मन्दिरों में भी ब्रह्माकुमारी बहनों के प्रवचन हुए जिसके परिणामस्वरूप कई नये जिज्ञासु सेवा केन्द्र पर प्रतिदिन ज्ञान एवं राजयोग की शिक्षा लेने आते रहते हैं।

वाराणसी में शिव-जयन्ती पर विभिन्न आध्यात्मिक कार्यक्रम—जन-जन को ईश्वरीय सन्देश देने हेतु वाराणसी के घाटों, मन्दिरों एवं प्रमुख स्थानों पर आध्यात्मिक प्रदर्शनी एवं प्रवचनों का कार्यक्रम हुआ तथा शहर के प्रमुख भागों से प्रभात फेरी एवं झाँकियाँ निकाली गई। वहाँ के 'विश्वनाथ मन्दिर', 'मारकण्डेय शिव मन्दिर' में 'शिव भक्तों' को परमात्मा शिव के अवतरण का विशेष सन्देश दिया गया। इसके अतिरिक्त निकटवर्ती स्थानों पर भी आयोजित कार्यक्रम बड़े सफल रहे जिसमें से कैथी ग्राम का परिणाम उल्लेखनीय है।

जगाधरी में विभिन्न आध्यात्मिक कार्यक्रम—जगाधरी में स्थित सेवा केन्द्र की ओर से वहाँ के एक पुरातन 'शिव मन्दिर' के प्रांगण में 'शिव दर्शन प्रदर्शनी' का आयोजन किया गया जिसे हजारों 'शिव भक्तों' ने देखकर परमात्मा शिव का वास्तविक परिचय पाया तथा अवतरण की शुभ सूचना प्राप्त की। इसके अतिरिक्त (दुखेड़ो ग्राम में) राधा स्वामी सत्संग के प्रधान संत कृपाल सिंह के जन्मोत्सव पर आयोजित कार्यक्रम में भी ब्रह्माकुमारी बहनों के प्रवचन हुए।

श्री गंगा नगर में शिव-जयन्ती समारोह—श्रीगंगा नगर में स्थिति सेवा केन्द्र की ओर से वहाँ के शुगर मिल कालोनी मेंसार्वजनिक प्रवचनों, गीतों एवं नाटकों का सांस्कृतिक कार्यक्रम हुआ जिसके द्वारा अनेकानेक आत्माओं को परमात्मा शिव का वास्तविक परिचय दिया गया।

बरेली में जन-जन को ईश्वरीय सन्देश—बरेली के निकट सेमीखेड़ा नाम स्थान पर शिवरात्री के अवसर पर एक विशाल मेला लगता है। इस अवसर पर 'शिव दर्शन प्रदर्शनी' का आयोजन वहाँ के सेवा केन्द्र द्वारा किया गया जिसे हजारों लोगों ने देखा और परमात्मा शिव का वास्तविक परिचय प्राप्त किया।

ककोड़ में शिव जयन्ती समारोह—ककोड़ सेवा-केन्द्र की ओर से शिव-जयन्ती के उपलक्ष में आध्यात्मिक प्रवचनों एवं गीतों का कार्यक्रम बड़ा ही सफल रहा। इस अवसर पर शिव ध्वजारोहण किया गया।

(शेष पृष्ठ ३८ पर)

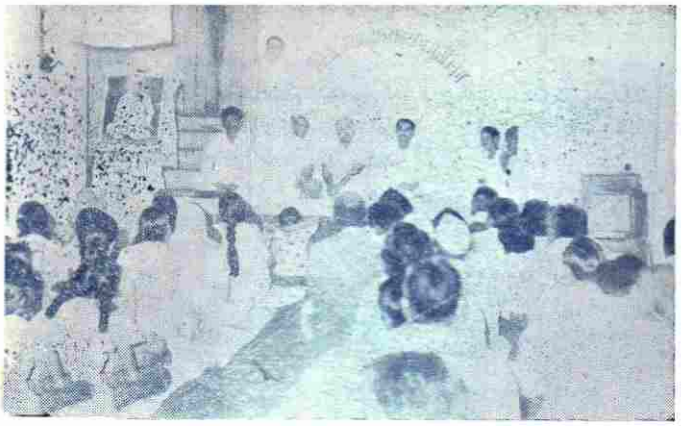

यह चित्र अमरावती में आयोजित पिता श्री स्मृति दिवस समारोह के अवसर का है। ब्र० कु० सीता प्रवचन कर रही हैं।

यह चित्र भावनगर में डिस्ट्रिक्ट कोर्ट के बार एसोसियेशन हाल में आयोजित कार्यक्रम के अवसर का है। ब्र० कु० रोबर्ट प्रवचन कर रहे हैं तथा मंच पर ब्रह्मा कुमारी बहनें बैठी हैं।

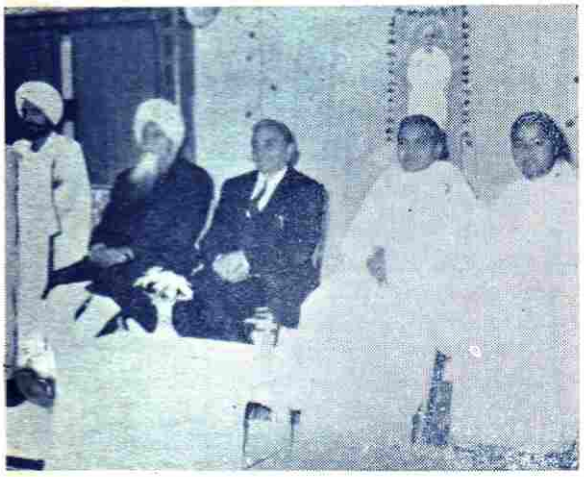

—यह चित्र पटियाला में आयोजित स्मृति दिवस समारोह के अवसर का है। मंच पर ज्ञानी लालसिंह (भूतपूर्व अध्यक्ष पंजाब पब्लिक सर्विस कमिशन) भ्राता लाजपत-राय पाली (वकील) तथा ब्र० कु० गुलजार मोहिनी व कमला जी बैठे हैं।

यह चित्र अलवर में आयोजित स्मृति दिवस समारोह के अवसर का है। वहां के मजिस्ट्रेट भ्राता रत्नलाल अग्रवाल प्रवचन कर रहे हैं। मंच पर ब्र० कु० निर्मला बैठी हैं।

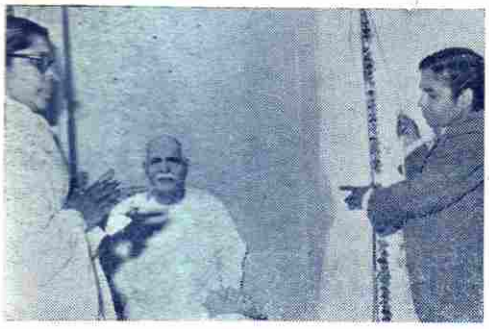

—यह चित्र फरीदाबाद में आयोजित स्मृति दिवस समारोह के अवसर का है। वहाँ के एस० डी० एम० भ्राता एस० के० नन्दा पिता श्री ब्रह्मा के चित्र का अनावरण कर रहे हैं।

यह चित्र फरूखाबाद में आयोजित स्मृति दिवस समारोह के अवसर का है। केन्द्रीय विद्यालय, फतेहगढ़ के प्रधानाचार्य भ्राता सोमदत्त जी प्रवचन कर रहे हैं। मंच पर वहाँ के बहन-भाई बैठे हैं।

—यह चित्र जेतपुर में आयोजित महिला स्नेह मिलन के अवसर का है। वहाँ की रेडियो डायरेक्टर वसुबहन भट्ट प्रवचन कर रही हैं।

चन्डीगढ़ में सैक्टर ३२ में शिवरात्रि समारोह में मंच पर (बायें से) ब्र० कु० हरजीत, ब्र० कु० अचल, ग्रुप कैपटन पी० जी० जोशी, स्टेशन कमाण्डर, ३. बी० आर० डी० एयर फोरस स्टेशन तथा ब्र० कु० अमीरचन्द बैठे हैं।

कुरुक्षेत्र में सूर्य ग्रहण के मेले के अवसर पर लगाई गई ज्ञानसूर्य शिव-दर्शन प्रदर्शनी पर भक्तों की भीड़। सामने ब्र० कु० राज, जनक आदि दिखाई दे रहे हैं।

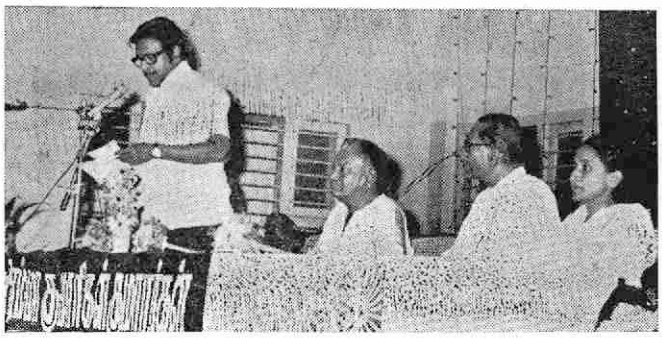

कोइम्बतूर में ४४ वीं शिवजयन्ति महोत्सव पर कलैक्टर टी० एस० प्रकासम सम्बोधित करते हुए, मंच पर (बाएं से) ब्र० कु० कल्पना, सी० बी० मथुस्वामी खेतीयार तथा आर० शनमुगम ठिजाई जी बैठे हैं।

भुवनेश्वर में वार्षिक उत्सव समारोह में डॉ० जोगमाया पटनायक भाषण दे रही हैं साथ में ब्र० कु० कमलेश, तथा ब्र० कु० पितबास जी मंच पर बैठे हैं।

होसपेट में महाशिवरात्रि महोत्सव में भाग ले रहे हैं (बाएं से) भ्राता विरुपन्न जी, नारायणचारी पंडित जी, गुरु शंकरया जी, शिल्प मूर्ति तथा ब्र० कु० शारदा जी।

चन्डीगढ़ में टैगोर थियेटर में हुए शिवजयन्ती महोत्सव के अवसर पर ब्र० कु० रक्षा प्रवचन करते हुए। मंच पर (बाएं) से ब्र० कु० अचल, भ्राता सन्तोष कुमार जनरल मनेजर "दी इन्डयन एक्सप्रेस" भ्राता अमा दत्त गौड़, एडवोकेट जनरल हरियाणा तथा ब्र० कु० अमीरचन्द जी दिखाई दे रहे हैं।

यह चित्र कटक में आयोजित आध्यात्मिक कार्यक्रम के अवसरका है। केन्द्रिय पर्यटन एवं जहाजरानी मन्त्री भ्राता जानकीबल्लभ पटनायक को श्रीकृष्ण का चित्र ब्र० कु० कमलेश भेंट कर रही हैं।

यह चित्र पालनपुर में आयोजित 'बाल उत्थान प्रदर्शनी' के उद्घाटन समारोह के अवसर का है। ब्र० कु० सरला प्रवचन कर रही हैं। मंच पर वहाँ के सिविल सर्जन, व अन्य बहन भाई बैठे हैं।

यह चित्र जयपुर के परमानन्द हाल में आयोजित 'स्मृति दिवस समारोह' के अवसर का है। 'दैनिक नवज्योति' पत्र के मालिक एवं सम्पादक भ्राता दुर्गाप्रसाद चौधरी मंच पर वहाँ के बहन भाईयों के बीच में बैठे हैं।

चित्र में बड़ौदा में आयोजित मानव एकता मेले का उद्घाटन वहाँ की जिला पंचायत के अध्यक्ष भ्राता चुन्नी भाई पटेल कर रहे हैं। साथ में अन्य बहन भाई खड़े हैं।

४४ वीं शिव जयन्ती समारोह पर सिकन्द्रावाद सेवा केन्द्र पर भ्राता एम० बागा रेड्डी (पंचायत राज्य मंत्री आन्ध्र प्रदेश) प्रदर्शनी देखने के पश्चात (बाएं से) ब्र० कु० शिव रात्रि, ब्र० कु० कान्तम, भ्राता बागा रेड्डी जी तथा ब्र० कु० मन्जु जी खड़ी हैं।

(पृष्ठ ३४ का शेष)

वहाँ के निकटवर्ती ग्राम में नव-निर्मित एक मन्दिर में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन भी किया गया जिससे अनेकानेक लोगों ने लाभ उठाया।

नागपुर में विभिन्न आध्यात्मिक कार्यक्रम — नागपुर सेवा-केन्द्र की ओर से शिव-जयन्ती महोत्सव वहाँ के कर्नाटक संघ हाल में बड़ी धूमधाम से मनाया गया। सार्वजनिक प्रवचनों, गीतों, नाटक एवं राजयोग फिल्म द्वारा उपस्थित जनता को परमात्मा शिव का वास्तविक परिचय दिया। इसके अतिरिक्त शहर के प्रमुख भागों से शोभा यात्रा एवं झाँकियाँ निकाली गई तथा अनेक स्कूलों में बाल प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। स्थानीय समाचार पत्रों में यह कार्यक्रम प्रकाशित हुआ।

आगरा में शिव-जयन्ती समारोह—आगरा सेवा-केन्द्र द्वारा शिव जयन्ती के उपलक्ष में सार्वजनिक प्रवचनों, गीतों एवं प्रदर्शनी का कार्यक्रम हुआ जिसमें मेम्बर पार्लियामेन्ट भ्राता निहालसिंह मुख्य अतिथि के रूप में पधारे थे। इस अवसर पर आयोजित प्रैस-कान्फ्रेंस, प्रभात फेरी तथा शिव ध्वजारोहण का कार्यक्रम भी बड़ा ही सफल रहा। स्थानीय समाचार पत्रों ने समस्त समाचार प्रकाशित करके जन-जन को ईश्वरीय सन्देश पहुंचाने में बहुत सहयोग दिया। निकटवर्ती ग्रामों में स्थित उप-सेवा केन्द्रों पर भी बहुत धूमधाम से शिव जयन्ती समारोह मनाया गया।

फरीदकोट में चरित्र निर्माण संग्राहालय तथा सम्मेलन—फरीदकोट में जन-जन को ईश्वरीय सन्देश देने हेतु आध्यात्मिक संग्रहालय का उद्घाटन वहाँ के भूतपूर्व एम० एल० ए० भ्राता कृपालसिंह ने किया। इस अवसर पर आयोजित सम्मेलन में भी दूर से अनुभवी वक्ताओं ने भाग लिया। इसके अतिरिक्त शिव जयन्ती के उपलक्ष में सार्वजनिक प्रवचनों, गीतों का कार्यक्रम हुआ तथा शहर के प्रमुख भागों से प्रभात फेरी निकाली गई।

मेरठ व मोदी नगर में विभिन्न आध्यात्मिक कार्यक्रम—मेरठ के बी० ए० वी० इन्टर कालेज के छात्रावास में त्रिदिवसीय 'गीता रहस्य आध्यात्मिक प्रदर्शनी' का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन सीटी मैजिस्ट्रेट भ्राता सुभाष कुमार ने किया। शहर के हजारों लोगों के अतिरिक्त अनेक सरकारी अधिकारियों एवं व्यापारियों ने भी इस प्रदर्शनी को देखा और परमात्मा शिव का यथार्थ परिचय प्राप्त किया। विभिन्न स्थानों पर प्रभात फेरी एवं शिव ध्वजारोहण के कार्यक्रमों द्वारा भी अनेकानेक आत्माओं को ईश्वरीय सन्देश दिया गया। इसी प्रकार मोदी-नगर में भी शिव जयन्ती धूमधाम से मनाई गई।

नई दिल्ली व दिल्ली में शिव जयन्ती समारोह—पहाड़गंज में स्थित सेवा केन्द्र की ओर से दिल्ली पब्लिक लायब्रेरी के कम्यूनिटी सैन्टर में तथा नरेला की जाट धर्मशाला में सार्वजनिक प्रवचनों, गीतों, कविताओं के रूप में शिव-जयन्ती समारोह बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर महाबोधी सोसाइटी के सचिव तथा 'सद्भावना समाचार पत्र' सम्पादक भी पधारे थे।

जनकपुरी में स्थित सेवा केन्द्र की ओर से त्रि-दिवसीय 'शिव दर्शन प्रदर्शनी एवं शिक्षाप्रद झाँकियों' का आयोजन किया गया जिसे हजारों लोगों ने देखा और परमात्मा शिव का वास्तविक परिचय प्राप्त किया।

राजोरी गार्डन में स्थित सेवा केन्द्र की ओर विभिन्न स्थानों पर सार्वजनिक प्रवचनों, गीतों व शिव ध्वजारोहण का कार्यक्रम हुआ जिससे अनेकानेक आत्माओं को पवित्र और योगी बनने की प्रेरणा मिली।

पटेल नगर में स्थित सेवा केन्द्र की ओर से आयोजित शिक्षाप्रद झाँकियों, प्रवचनों, गीतों एवं शिव ध्वजारोहण का कार्यक्रम बड़ा ही सफल रहा।

करोलबाग (पाण्डव भवन) नई दिल्ली में स्थित सेवा केन्द्र की ओर से विभिन्न स्थानों पर 'शिवदर्शन प्रदर्शनी', प्रवचनों, ध्वजारोहण, राजयोग फिल्म, गीतों एवं झाँकियों का कार्यक्रम हुआ जिसके द्वारा अनेकानेक आत्माओं को परमात्मा शिव का परिचय दिया गया तथा उन्हें श्रेष्ठाचारी जीवन बनाने की प्रेरणा दी।

कृष्णानगर में स्थित सेवा केन्द्र की ओर से सार्वजनिक प्रवचनों गीतों एवं झाँकियों के रूप में यह महानपर्व बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर नव-निर्वाचित लोकसभा के सदस्य भ्राता एच० के० एल० भगत मुख्य अतिथि के रूप में पधारे थे जो बहुत ही प्रभावित होकर गये। इसी प्रकार गुडगाँव,

सोनीपत, पानीपत, काश्मीरी गेट, शाहदरा, पालम, फरीदाबाद, महरौली, मालवीय नगर, साऊथ ऐक्स-टेन्शन, ग्रीन पार्क, लाजपतनगर आदि सेवा केन्द्रों द्वारा भी शिव जयन्ती का महान पर्व बड़ी धूमधाम से मनाया गया।

बड़ौदा में विभिन्न आध्यात्मिक कार्यक्रम—बड़ौदा में स्थित सेवा-केन्द्र की ओर से जन-जन को ईश्वरीय सन्देश देने हेतु 'स्मृति-दिवस' तथा 'शिव-रात्रि' समारोह बहुत धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर शहर के मुख्य भागों से प्रभात फेरी निकाली गई तथा शिव ध्वजारोहण का कार्यक्रम हुआ। इसका समाचार वहाँ के दैनिक समाचार पत्र लोकसत्ता, बड़ौदा समाचार तथा गुजरात समाचार में प्रकाशित हुआ।

कटक में शिव-जयन्ती समारोह—कटक सेवा-केन्द्र की ओर से आध्यात्मिक प्रदर्शनी, प्रवचन, गीतों, एवं झाँकियों के रूप में शिव-जयन्ती समारोह मनाया गया। इस अवसर पर पर्यटन विभाग के डिप्टी-डायरेक्टर भ्राता हृदयानन्दराय मुख्य अतिथि के रूप से पधारे थे। अनेकानेक लोगों ने परमात्मा शिव का वास्तविक परिचय प्राप्त किया।

सिकन्दराबाद में शिव-जयन्ती समारोह—सिकन्दराबाद में शिव जयन्ती के उपलक्ष में सार्वजनिक प्रवचनों, गीतों, ध्वजारोहण एवं प्रभात फेरी का कार्यक्रम हुआ जिसके द्वारा अनेक आत्माओं को परमात्मा शिव का वास्तविक परिचय दिया गया। पंचायत राज्य मंत्री भ्राता एम० बागा रेड्डी मुख्य अतिथि के रूप में पधारे थे। इसके अतिरिक्त निकटवर्ती ग्रामों तथा श्मशान में भी ईश्वरीय सेवा की गई जिससे अनेक लोगों ने लाभ उठाया।

गोहाटी में शिव-जयन्ती समारोह—गोहाटी सेवा केन्द्र की ओर से शिव जयन्ती समारोह बड़ी धूमधाम से मनाया गया जिसमें गोहाटी कालेज के प्रधानाचार्य भ्राता बी० आर० डेका मुख्य अतिथी के रूप में पधारे थे। इस अवसर पर शिव दर्शन प्रदर्शनी एवं ध्वजारोहण का कार्यक्रम भी बड़ा सफल रहा।

कलकत्ता में शिव-जयन्ती समारोह—कलकत्ता के राम बगान तथा आशुतोष मुकर्जी मार्ग पर स्थित सेवा केन्द्रों की ओर से शिव-जयन्ती के उपलक्ष में सार्वजनिक प्रवचनों गीतों का कार्यक्रम हुआ जिसमें हिन्दु मिशन के अध्यक्ष स्वामी सच्चिदानन्द तथा रामाकृष्ण मिशन के स्वामी मुक्तानन्द महाराज भी पधारे थे। इस कार्यक्रम का समाचार 'स्टेट्समैन', विश्वामित्र, सन्मार्ग, आनन्द बाजार तथा युगान्तर आदि समाचार पत्रों में प्रकाशित हुआ। इसके अतिरिक्त सर्वमंगला मन्दिर व श्री रामपुर में आध्यात्मिक प्रदर्शनी द्वारा हजारों लोगों को ईश्वरीय सन्देश दिया गया। वहाँ के सिक्यूरिटी फोर्स कैम्प तथा 'मानव धर्म प्रचार मण्डली' में भी बहनों के प्रवचन हुए।

तिनसुकिया और डिब्रुगढ़ में शिव जयन्ती समारोह—तिनसुकिया सेवा केन्द्र की ओर शिव जयन्ती समारोह बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर शहर के मुख्य भागों से एक विशाल शोभा यात्रा निकाली गई तथा शिव ध्वजारोहण का कार्यक्रम हुआ। निकटवर्ती स्थान शिव धाम में 'शिव दर्शन प्रदर्शनी' का आयोजन भी किया गया जिसे लगभग ३०,००० लोगों ने देखा और परमात्मा शिव का वास्तविक परिचय प्राप्त किया।

रोपड़ में शिव जयन्ती समारोह—जन-जन को ईश्वरीय सन्देश देने हेतु रोपड में शिव जयन्ती समारोह बड़ी धूमधाम से मनाया गया जिसके द्वारा अनेकानेक आत्माओं को परमात्मा शिव का वास्तविक परिचय दिया गया।

झरिया में शिव जयन्ती समारोह—झारिया में स्थित सेवा-केन्द्र की ओर से शिव जयन्ती के उपलक्ष में सार्वजनिक प्रवचनों, गीतों एवं झाँकियों का कार्यक्रम हुआ जिससे अनेकानेक आत्माओं को परमात्मा शिव का वास्तविक परिचय दिया गया तथा उन्हें परमात्मा शिव के अवतरण का शुभ संदेश दिया गया।

धारवाड़ में शिव जयन्ती समारोह– धारवाड़ में स्थित सेवा केन्द्र की ओर से शिक्षाप्रद झाँकियों, प्रवचन एवं गीतों के रूप में शिव-जयन्ती समारोह बड़ी धूमधाम से मनाया गया जिससे अनेकानेक आत्माओं ने लाभ उठाया।

अम्बाला कैन्ट में शिव जयन्ती समारोह—अम्बाला सेवा केन्द्र की ओर से विभिन्न स्थानों तथा निकटवर्ती ग्रामों में आध्यात्मिक प्रदर्शनी, प्रवचनों

एवं शिव ध्वजारोहण का कार्यक्रम हुआ जिसके द्वारा अनेकानेक आत्माओं को परमात्मा शिव का यथार्थ परिचय दिया गया। इनमें से रेलवे कालोनी, एयरफोर्स आफिस,टुण्डला, मलाना,प्लेलेदार मुहल्ला, परेड ग्राम, महेशनगर, बीड मंगोली आदि-आदि का नाम उल्लेखनीय है। शहर के मुख्य भागों से विशाल शोभा यात्रा एवं झाँकियाँ भी निकाली गई तथा 'पवित्र और योगी' बनने का ईश्वरीय सन्देश दिया गया।

कुरुक्षेत्र में सूर्य ग्रहण के मेले के अवसर पर ज्ञान सूर्य शिव दर्शन आध्यात्मिक प्रदर्शनी—सूर्य ग्रहण के अवसर पर एक विशाल पंडाल में शिव दर्शन आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गई। जिस का उद्घाटन पंजाब हरियाणा ज़ोन की इन्चार्ज दीदी चन्द्रमणि जी ने किया। इस प्रदर्शनी से लगभग २ लाख लोगों ने शिव का परिचय प्राप्त किया। इस अवसर पर हज़ारों पुस्तकें 'सूर्य ग्रहण का वास्तविक रहस्य' फ्री बांटी गईं।

जगन्नाथ पुरी में कृषि मंत्री भ्राता जगन्नाथ मल्लीक जी विश्व नव निर्माण प्रदर्शनी का उद्घाटन कर रहे हैं पास में बहिन-भाई खड़े हैं।

१.	मुख्य सम्पादक का नाम	—	जगदीश चन्द्र हसीजा
२.	प्रकाशक का नाम	—	उपरोक्त
३.	स्वामित्व	—	उपरोक्त
४.	क्या भारत का नागरिक है ?	—	हाँ
५.	प्रकाशन स्थान :	—	१५१ ई कमला नगर देहली-७
६.	मुद्रक का नाम :	—	गगन प्रिन्टर्स कृष्ण नगर, देहली ११००५१
७.	क्या भारत का नागरिक है ?	—	हाँ

१ मार्च, १९८०

हस्ताक्षर
जगदीश चन्द्र हसीजा
प्रकाशक

जगदीश चन्द्र हसीजा, सम्पादक, एवं प्रकाशक, १५१ ई, कमला नगर, दिल्ली ने गगन प्रिंटर्स, कृष्ण नगर, दिल्ली-५१ से छपवाया, Regd. No. 10563/65-D (D) 178

हुबली में आयोजित विश्व शान्ति सम्मेलन में भूतपूर्व केन्द्रिय मन्त्री डा० सरोजिनी महिषी प्रवचन कर रही है।

यह चित्र हैदराबाद के 'टूरिस्ट फैस्टिवल में आयोजित आध्यात्मिक प्रदर्शनी के उद्घाटन का है। आन्ध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री डा० चेन्ना रेड्डी, उनकी धर्म पत्नी तथा पर्यटन मंत्री बहन रोडा मिस्त्री को ब्र० कु० मञ्जु चित्रों की व्याख्या देने के बाद उनके साथ खड़ी है।

←यह चित्र हुबली में आयोजित विश्व शान्ति सम्मेलन के अवसर का है। मुरसावीर मठ के जगद्गुरु गंगाधरस्वामी तथा मुख्य प्रशासिका ब्र० कु० प्रकाशमणी जी मोमबत्ती जलाकर सम्मेलन का उद्घाटन कर रही हैं।

हैदराबाद में सरकार द्वारा लगाया गया 'टूरिस्ट मेला' में आयोजित प्रदर्शनी को आन्ध्र प्रदेश के राज्यपाल भ्राता के० सी० अब्राहीम तथा पर्यटन मंत्री बहन रोडा मिस्त्री को ब्र० कु० मञ्जु समझा रही हैं।

यह चित्र बम्बई में आयोजित आध्यात्मिक कार्यक्रम का है। ग्याना के आवास एवं जन कल्याणमंत्री भ्राता स्टीव नारायण प्रवचन कर रहे हैं तथा साथ में हाईकोर्ट के जज बैठे हैं।

←यह चित्र उज्जैन में आयोजित आध्यात्मिक प्रदर्शनी के उद्घाटन के अवसर का है। विक्रम विश्वविद्यालय के कुलपति भ्राता पी० एन० कवठेकर जी टेप काट कर प्रदर्शनी का उद्घाटन कर रहे हैं।

Regd. No. D (D) 178

केन्द्रिय न्याय एवं विधि मंत्री भ्राता शिवशंकर को ईश्वरीय सन्देश सुनाने के पश्चात् ब्र० कु० जयप्रकाश वकील उन्हें साहित्य भेंट कर रहे हैं। साथ में ब्र० कु० इन्द्रा तथा प्रेस रिपोर्टर ब्र० कु० राधा खड़ी हैं।

यह चित्र कलकत्ता में आयोजित 'स्मृति दिवस समारोह' के अवसर का है। गीता प्रचार मण्डली के स्वामी देवानन्द सरस्वती प्रवचन कर रहे हैं। मंच पर ब्र० कु० निर्मल शान्ता, बिन्दु व कानन जी बैठे हैं।

यह चित्र बड़ौदा में आयोजित स्मृति दिवस समारोह के अवसर का है। मुख्य अतिथि भ्राता सत्पथी के साथ वहाँ के बहन भाई बैठे हैं।

यह चित्र कटक में आयोजित 'अन्तर्राष्ट्रीय यो० दिवस' के अवसर पर न्यायविद सम्मेलन का है। स्वामी चैतन्य पुरी (वृंदावन आश्रम) तथा 'समाज पत्र' के सम्पादक भ्राता राधानाथ रथ के साथ ब्र० कु० कमलेश व अन्य बहन-भाई बैठे हैं।

यह चित्र दार्जिलिंग में आयोजित 'पिताश्री दिवस समारोह' के के अवसर का है। गायत्री माता प्रवचन कर रही हैं तथा मंच पर ब्र० कु० चंदता एवं तुलसी बैठी हैं।

इस चित्र में ब्र० कु० इन्द्रा, केन्द्रिय शिक्षा एवं—स्वास्थ्य मंत्री भ्राता वी० शंकरानन्द को ईश्वरीय साहित्य भेंट कर रही हैं। उनके साथ चाँदनी चौक केन्द्र के बहन-भाई खड़े हैं।